भारत की लोक कथाऐं

तमिल नाडु

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Bharat Ki Lok Kathayen: Tamil Nadu (Folktales of India: Tamil Nadu)
Cover Page picture : Meenakshi Temple, Madurai. Tamil Nadu
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Tamil Nadu

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

भारत की लोक कथाऐं–तमिल नाडु 5

गुरू परमार्थ और उनके पॉच मूर्ख शिष्य 7

1 पहली घटना – गुरू जी और नदी 8

2 दूसरी घटना – गुरू जी और घोड़ा 21

3 तीसरी घटना – गुरू जी और बैल 36

4 चौथी घटना – गुरू जी और घोड़ा 43

5 पॉचवीं घटना – गुरू जी की मौत की भविष्यवाणी 61

6 छठी घटना – गुरू जी की मौत 77

गुरू जी की शिक्षा 89

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब सौ साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

भारत की लोक कथाऐं–तमिल नाडु

इस सीरीज़ में, यानी "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ में, भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे भारत की कुछ बहुत सामान्य लोक कथाऐं ऐसी मिल गयीं जिनको मैंने यहाँ लिख लिया। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस प्रोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियाँ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है। इसमें रूस देश इसको क्षेत्रफल में बड़ा बनाता है और चीन और भारत जैसे देश इसको जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहाँ हर **100** मील की दूरी पर खाना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

भारत की लोक कथाओं के हम कई संकलन पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं[1]।

"भारत की लोक कथाऐं–**1**" और "भारत की लोक कथाऐं–**2**" में हमने भारत की कुछ सामान्य लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं। "भारत की लोक कथाऐं–आसाम" में हमने हिन्दी न बोलने वाले राज्य आसाम की कुछ लोक कथाऐं हिन्दी में दी थीं। "भारत की लोक कथाऐं–बंगाल", "भारत की लोक कथाऐं–बंगाल–**1**" "भारत की लोक कथाऐं–बंगाल–**2**" "भारत की लोक कथाऐं–बंगाल–**3**" में हमने बंगाल की कुछ लोक कथाऐं दी थीं।

लो अब भारत की हिन्दी न बोलने वाले एक और प्रान्त की लोक कथाओं की पुस्तक प्रस्तुत है – "भारत की लोक कथाऐं–तमिल नाडु"। इस पुस्तक में हम तुम्हें भारत के दक्षिणी हिस्से की, यानी तमिल नाडु की, एक लोक कथा प्रस्तुत कर रहे हैं जो एक वेब साइट से ली गयी है।[2]

तो लो पढ़ो ये लोक कथा भारत के एक ऐसे प्रान्त की जहाँ हिन्दी नहीं बोली जाती।

---

[1] "Bharat Ki Lok Kathayen-1"
"Bharat Ki Lok Kathayen-2"
"Bharat Ki Lok Kathayen-Assam"
"Bharat Ki Lok Kathayen-Bengal"
"Bharat Ki Lok Kathayen-Bengal-1"
"Bharat Ki Lok Kathayen-Bengal-2"
"Bharat Ki Lok Kathayen-Bengal-3", all by Sushma Gupta in Hindi language.

[2] http://www.indiadivine.org/guru-paramartha-and-his-five-foolish-disciples/

गुरू परमार्थ और उनके पॉच मूर्ख शिष्य[3]

यह एक हॅसी और ज्ञान की लोक कथा है जो दक्षिण भारत के तमिल नाडु प्रान्त में कही सुनी जाती है।

यह एक बहुत ही बेकार के गुरू जी और उनके जैसे ही पॉच महामूर्ख शिष्यों की भी कहानी है। इसमें इनकी छह कहानियॉ है जो हिन्दू धर्म के छह वैदिक विचारों के खिलाफ बोलती हैं। यहॉ वे वैदिक विचार तो नहीं दिये गये हैं केवल उनकी कहानियॉ ही दी हुई हैं।

यह बहुत पुरानी बात है कि दक्षिण भारत के एक छोटे से गॉव में एक बहुत ही गरीब सीधा सीधा बूढ़ा रहता था जिसका नाम था परमार्थ। वह एक बहुत ही बेकार का गुरू था।

उन गुरू जी के पॉच शिष्य थे जो उन्हीं की तरह मूर्ख थे। उनके नाम भी उनके गुणों के अनुसार ही थे – खर दिमाग, मूर्ख, कमजोर, बेवकूफ और गधा[4]।

क्योंकि उन दिनों सब गुरू और शिष्य आश्रमों में रहते थे ऐसे ही वे सब भी रहते थे और इसी लिये उनके पास बहुत सारे काम थे और उनको बहुत सारे अनुभव होते रहते थे।

---

[3] Guru Paramarth and His Five Foolish Disciples – a folktales told and heard in Tamil Nadu, Southern India. Taken from the Web Site : http://www.indiadivine.org/guru-paramartha-and-his-five-foolish-disciples/

[4] Mudhead, Fool, Weakling, Idiot and Rascal

1 पहली घटना – गुरू जी और नदी

एक दिन गुरू जी और उनके पॉचों शिष्य सुबह सुबह मन्दिर जाने के लिये निकले। यह मन्दिर उनके आश्रम के पास के एक गॉव में ही था। सो जब वे सब मन्दिर जा रहे थे तो रास्ते में गुरू जी अपने शिष्यों को जीवन के बारे में बताते जा रहे थे।

वह बोले — "बच्चो, जीवन बहुत आसान है। जीवन वही है जो सब जीवधारियों के पास होता है सारे जीवधारी उसी से चलते फिरते हैं। देखो यह पेड़ देखो। इसकी पत्तियॉ हिल रही है इसलिये यह हम यकीन से कह सकते हैं कि इस पेड़ में जीवन है।"

गुरू जी के सारे शिष्य एक साथ बोले — "गुरू जी, यह तो आपने बहुत अच्छी बात बतायी। आप तो इतनी मुश्किल बातों को भी कितनी आसानी से समझा देते हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हम आप जैसे गुरू के शिष्य हैं।"

कुछ देर बाद ही एक नदी आ गयी। गुरू जी ने अपने सबसे पुराने शिष्य गधे से पूछा — "ओ गधे, ज़रा यह देख कर तो बताओ कि यह नदी सो रही है कि जाग रही है? मुझे अपने पुराने अनुभवों से पता है कि यह नदी बहुत ही चालाक नदी है।

हमको इसके साथ बरताव करने में बहुत ही सावधान रहना चाहिये। इससे पहले कि हम इस नदी को पार करें हमको यह पता कर लेना चाहिये कि यह नदी इस समय सो रही है या जागी हुई।

सो तुम जाओ और पता लगा कर लाओ कि यह सो रही है या जाग रही है।"

गधा गुरू जी को खुश करने के लिये तुरन्त ही नदी के किनारे की तरफ दौड़ा गया। उसने यह जानने के लिये एक प्लान सोचा और उसके अनुसार पेड़ की एक सूखी डंडी ढूँढी और उसमें आग लगा दी।

वह बोला — "मैं इस नदी को जला दूँगा और इस तरह से पता कर लूँगा कि यह सो रही है या जाग रही है। अगर यह इस डंडी की आग के जलने से चिल्लायी तो समझो कि यह जाग रही है नहीं तो यह सो रही है।"

अपने इस प्लान के अनुसार उसने वह डंडी जला कर नदी में फेंक दी। जैसे ही उसने वह जलती डंडी नदी में फेंकी कि उसने फिस्स की एक आवाज सुनी।

वह बेचारा तो उस आवाज को सुन कर इतना डर गया कि वहीं गिर पड़ा।

फिर वह कॉपता चिल्लाता उठ कर अपने गुरू जी के पास भागा और जा कर बोला — "गुरू जी गुरू जी अभी हमको यह नदी पार नहीं करनी चाहिये क्योंकि यह नदी तो बिल्कुल जागी हुई है। जैसे ही मैंने इसको छुआ तो इसने बहुत ज़ोर से हिस्स की आवाज की और मुझे धुँए से ढक दिया।

यह तो मेरे ऊपर इतनी गुस्सा थी कि मुझे डर लगा कि यह तो अभी उठेगी और मुझे मारेगी। यह तो केवल आपकी और अपने माता पिता की दया से मैं यहॉ तक ज़िन्दा वापस आ सका वरना तो यह न जाने मेरा क्या हाल करती। उफ़ मुझ पर कितनी बुरी बीती।"

गुरू जी ने गधे को शान्त किया और बोले — "तो अब हम क्या करें? इसको तो हमको भगवान की इच्छा समझ कर मान लेना चाहिये। ठीक है हम तब तक इन्तजार करते हैं जब तक यह नदी सो नहीं जाती।"

सो वे सब नदी के सोने का इन्तजार करने के लिये पास के एक बागीचे में चले गये और वहीं बैठ कर उस नदी के चालाक स्वभाव के बारे में बाते करने लगे।

गुरू जी के पॉचों शिष्यों में से मूर्ख[5] को दर्शन[6] बहुत अच्छा लगता था। वह बोला — गुरू जी, मैंने नदी के दिमाग के बारे में बहुत कुछ सुना है और खास करके इस नदी के दिमाग के बारे में। हमको इसकी ताकत को कम नहीं ऑकना चाहिये।

मेरे बाबा का तो अपना एक अनोखा ही अनुभव है इसके बारे में। वह मैं आपको बताता हूॅ।

[5] Fool

[6] Translated for the word "Philosophy"

मेरे बाबा एक बहुत बड़े सौदागर थे। एक बार वह अपना काम धन्धा करके वापस आ रहे थे तो वह इसी रास्ते से गुजरे। उनके नौकर और दो नमक से लदे हुए गधे उनके साथ थे।

गरमी के दिन थे सो दिन काफी गरम था। इसलिये उन लोगों ने सोचा कि वे लोग इस नदी में नहा लें और गधों को भी थोड़ा सुस्ता लेने दें।

सो आदमी और गधे दोनों नदी में नहाने के लिये पानी में घुसे और नहा कर पेड़ की ठंडी छॉह में बैठ गये। फिर जब गरमी थोड़ी कम हो गयी तो वे फिर चल दिये।

वे बहुत दूर नहीं गये थे कि मेरे बाबा का एक नौकर चिल्लाया — "ओह नहीं मालिक, ये नमक के बोरे अभी भी ठीक से बन्द तो हैं पर ये भीगे हैं और इनमें नमक भी नहीं है। इनका नमक कहॉ गया? किसने लिया इनका नमक?"

मेरे बाबा कुछ सोच कर बोले — "हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं। अगर इस नदी ने हमारा नमक न लूट लिया होता तो यह बहुत गुस्सा हो जाती और हम सबको खा जाती।

हम सबको भगवान ने बचा लिया कि इसने केवल हमारा नमक ही खाया हमको नहीं खाया इसलिये हम लोग तो बहुत भाग्यशाली हैं।"

यह सुन कर सारे नौकर सन्तुष्ट हो गये और आगे बढ़ गये।

जब वह मूर्ख अपने गुरू जी से इस तरह से नदी का दिमाग बता रहा था कि तभी एक आदमी घोड़े पर सवार हो कर उनके पास से गुज़रा।

वह आदमी नदी की तरफ जा रहा था सो शिष्यों ने उसको चेतावनी दी कि वह अभी नदी में न जाये क्योंकि वह नदी अभी जाग रही थी और उसका कुछ भी बुरा कर सकती थी पर उसने उनकी चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपना घोड़ा नदी के अन्दर से दौड़ाता हुआ नदी के उस पार पहुँच गया।

यह देख कर गुरू जी तो हक्का बक्का रह गये और उनके मुँह से निकला — "ओह यह आदमी कितना बहादुर है।"

उनके सारे शिष्य भी एक साथ बोले — "हॉ यह तो है।"

अब तक तो वह घुड़सवार नदी पार करके उसके दूसरी तरफ गायब भी हो चुका था।

उसको नदी के दूसरी ओर गायब होते देख कर कमजोर[7] नाम का शिष्य बोला — "गुरू जी, अगर आपके पास भी एक ऐसा ही घोड़ा होता तो हमारी सब मुश्किलें आसान हो जातीं।

तब हमको इन चालाक नदियों की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। हम उनको आसानी से पार कर जाते। तो हम लोग एक घोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते?"

[7] Weakling

गुरू जी बोले — "यह बात हम बाद में करेंगे। अभी तो हमको और बहुत सारी जरूरी बातों पर सोच विचार करना है। अब शाम होने आ रही है तो शायद अब यह नदी सो रही होगी नहीं तो वह घुड़सवार इतनी आसानी से यह नदी पार कैसे कर जाता? मुझे पूरा यकीन है कि यह अब सो रही है। खरदिमाग[8], ज़रा जा कर देखना तो कि अब यह सो गयी या नहीं।"

खरदिमाग गुरू जी को खुश तो रखना चाहता था पर वह उनके पॉचों शिष्यों में सबसे कम अक्ल वाला था।

उसने सोचा — "यह तो बहुत ही मुश्किल काम है पर मैं अपने गुरू जी को भी तो नाखुश करना नहीं चाहता सो मैं भी यह जानने के लिये कि नदी सो रही है या जाग रही है वही तरीका इस्तेमाल करता हूँ जो गधे ने किया था।

अच्छा तो यही है कि पहले से आजमाया हुआ तरीका ही इस्तेमाल किया जाये। सो कहॉ है वह डंडी जो उस गधे ने इस्तेमाल की थी?"

आखिर उसे वह डंडी मिल ही गयी जिसे गधे ने नदी के जागने सोने को जॉचने के लिये इस्तेमाल किया था – पानी में भीगी हुई और एक तरफ से जली हुई।

वह उस बुझी हुई गीली डंडी को ले कर नदी की तरफ भागा। डरते हुए उसने वह डंडी पानी में डुबोयी। भगवान का लाख लाख

[8] Mudhead

धन्यवाद कि नदी के पानी में से कोई धुँआ नहीं निकला और कोई आवाज भी नहीं आयी।

वह मुस्कुराया और बोला — "अब गुरू जी खुश हो जायेंगे।"

वह चुपचाप अपने साथियों के पास पहुँचा और गुरू जी से बोला — "गुरू जी, मैंने नदी को जॉच लिया। यही समय है जब हमको यह नदी पार कर लेनी चाहिये। यह मौका इतनी आसानी से फिर नहीं आयेगा क्योंकि नदी इस समय गहरी नींद में सो रही है।

शोर नहीं मचाना और सॅभाल कर पैर रखना। अगर हम अभी चलें और सावधानी से चलें तो नदी नहीं जागेगी और हम उसको आसानी से पार कर जायेंगे। आओ।"

जब गुरू जी और उनके दूसरे शिष्यों ने यह सुना वे बहुत सावधानी से उठे और एक एक कदम धीरे धीरे रख कर नदी पार करने लगे।

उनके सबके दिल धड़क रहे थे। उनके कान छोटी से छोटी आवाज सुनने के लिये तैयार थे। इस तरह से वह नदी उनको पार करने में बहुत बड़ी लग रही थी।

आखिर वे सब नदी पार करके उसके दूसरे किनारे पर पहुँच गये। वहॉ पहुँच कर तीन शिष्य तो नाचने गाने लगे।

वे बोले — "गुरू जी आप कितने अच्छे हैं। आपकी दया से हमने इस भयानक नदी को कितनी आसानी से पार कर लिया। आप कितने अक्लमन्द हैं, आप कितने ताकतवर हैं।"

मूर्ख बोला — "अभी इतना ज़्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है। पहले हम यह तो देख लें कि हम लोग सब इधर आ गये कि नहीं।"

और इसके साथ ही उसने सबको गिनना शुरू कर दिया। जैसा कि उसके नाम से ही पता चलता था कि वह उन सबमें सबसे ज़्यादा अक्लमन्द तो नहीं था तो वह अपने सब साथियों को गिनता रहा – एक, दो, तीन, चार और यह पॉच।

उसकी गिनती पॉच पर आ कर रुक जाती थी। उसको मालूम था कि वे जब चले थे तो वे सब छह थे।

वह बोला — "गुरू जी, यह तो बड़ा गड़बड़ हो गया। हममें से एक आदमी खो गया है। जब हम नदी के किनारे बैठे हुए थे तब हम सब छह थे पर अब हम केवल पॉच ही हैं। हमारा एक आदमी कहीं खो गया है। यह नदी कितनी खराब है।"

गुरू जी बीच में ही बोले — "इतनी जल्दी मत करो। जल्दी करना किसी भले आदमी का काम नहीं है। चलो यहॉ बैठते हैं और अबकी बार मैं गिनता हूँ कि हम लोग कितने हैं।"

सब वहीं बैठ गये और गुरू जी ने गिनना शुरू किया। और जैसा कि तुमको मालूम है गुरू जी तो बहुत ही सीधे थे सो उन्होंने भी सबको पॉच ही गिना।

उन्होंने एक बार गिना, दो बार गिना, तीन बार गिना पर उनकी गिनती भी पॉच से आगे नहीं बढ़ी। वह परेशान हो गये तो वह पालथी मार कर[9] ध्यान लगा कर बैठ गये।

कुछ देर बाद उन्होंने अपनी ऑखें खोलीं और अपने शिष्यों से बोले — "हमको इसे भगवान की इच्छा ही समझना चाहिये कि हमारा केवल एक ही आदमी खोया है। यह नदी तो वाकई में बहुत ही खतरनाक है।

बल्कि यह तो इतनी खतरनाक निकली कि यहॉ तक कि जब यह सो रही थी तब भी इसने हमको तंग किया। इस नुकसान ने तो मेरा दिल ही तोड़ दिया पर क्या करें। हमको यह हमेशा याद रखना चाहिये कि हम लोग साधु हैं और ऐसे दुखों को हमको ज़्यादा नहीं सोचना चाहिये।"

सभी लोग बहुत परेशान थे सो इसी परेशानी की हालत में सब बार बार एक दूसरे को गिनने लगे पर पॉच से गिनती आगे ही नहीं बढ़ी। सब बहुत दुखी थे, रो रहे थे, सुबक रहे थे कि इसी हालत में गुरू जी और ज़्यादा परेशान हो गये और नदी को कोसने लगे।

वह बोले — "ओ चुड़ैल नदी, तुम कैसी हो, क्या तुम्हारे दिल में ज़रा सी भी दया नहीं है? क्या तुम्हारे कोई भाई बहिन नहीं है? क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे इस बरताव ने हमको कितना दुखी किया है?

[9] Sitting in a crosslegged position

मेरे सारे शिष्य कितने बढ़िया आदमी हैं। वे किसी भी गुरू की प्रेरणा हैं और तुमने कितनी निर्दयता से उनमें से एक को खा लिया है। हालॉकि हमने तुम्हारा कितना खयाल भी रखा कि हमने तुम्हारी नींद में भी खलल नहीं डाला फिर भी तुमने हमको धोखा दिया।

हम साधु हैं इसलिये हम तुमको कोई सजा तो नहीं देंगे पर तुम यकीन रखो कि एक दिन तुम भी धोखा खाओगी।"

इस तरह से गुरू जी और उनके चेले पागलों की तरह से नदी को कोसे जा रहे थे और रोये जा रहे थे।

तभी एक और आदमी मन्दिर की तरफ जा रहा था। वह इन सबको रोते देख कर कुछ परेशान सा हो गया। उसने सोचा "इतने सारे लोग क्यों परेशान हैं? क्या बात हो सकती है?"

ऐसा लगता है कि इनके साथ कुछ बहुत ही भयानक घटना घट गयी है। देखता हूँ चल कर पूछता हूँ कि क्या मामला है।"

सो वह उनकी तरफ गया और उनसे पूछा — "जनाब क्या बात है आप सब इतने दुखी क्यों हैं? क्या आपका कोई मर गया है? आप मुझे बतायें। शायद मैं कुछ आपकी सहायता कर सकूँ।"

गुरू जी रोते हुए बोले — "दोस्त, शायद तुम हमारे दर्द को न समझ सको। पहले मेरे पॉच बहुत अच्छे शिष्य थे पर इस धोखेबाज नदी की वजह से अब केवल चार ही रह गये हैं। अब मैं क्या करूँ। इस नुकसान की वजह से हम सब बहुत दुखी हैं।"

उस आदमी ने यह सुन कर उन सब पर एक नजर डाली तो पाया कि वे तो पॉच नहीं बल्कि छह ही थे। वह अपने मन में मुस्कुराया कि ये लोग कितने सीधे सादे लोग हैं। चलो इन लोगों से थोड़ा आनन्द लिया जाये।

सबसे पहले उसने गुरू जी को झुक कर प्रणाम किया फिर बोला — "मैं आपका दुख समझ सकता हूॅ गुरू जी। यह नदी तो वाकई में बहुत धोखेबाज है। शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूॅ।

मुझे अथर्व वेद[10] का बहुत अच्छा ज्ञान है। मैं भूतों यक्षिणी गन्धर्व आदि को भी अच्छी तरह जानता हूॅ और ये सब मेरे काबू में रहते हैं। मैं जैसा कहूॅगा वे वैसा ही करेंगे। अगर आप मुझे थोड़ी सी दक्षिणा दें तो मैं आपके उस खोये हुए शिष्य को नदी से वापस ला सकता हूॅ। यह मेरा फर्ज है कि मैं आपकी सहायता करूॅ।"

यह सुन कर गुरू जी तो खुशी से पागल हो उठे। वह बोले — "लगता है कि आपको हमारे लिये भगवान ने भेजा है। मैं आपसे बहुत ज़्यादा प्रभावित हूॅ कि इतने ज्ञानी होते हुए भी आप हम गरीब साधुओं की सहायता कर रहे हैं।

हम आपको बहुत धन्यवाद देते हैं और जो कुछ थोड़ा बहुत हमारे पास है उसे हम आपको दक्षिणा में देने को तैयार हैं। आप

[10] Ved are the main scriptures of Hindu Dharm. They are four – Rig Ved, Yajur Ved, Saam Ved and Atharv Ved

बस मेरा शिष्य वापस ला दें। हम आपको पैंतालीस सोने के सिक्के देंगे।"

वह आदमी यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि बिना किसी काम के उसको पैंतालीस सोने के सिक्के मिल जायेंगे तो वह बहुत जल्दी ही अपने काम पर लग गया।

उसने नाटकीय ढंग से एक डंडी उठायी और बोला — "आप सब यहॉ एक लाइन में झुक कर और अपनी ऑखें बन्द करके खड़े हो जायें। पर जब भी मैं आप लोगों में से जिसको छुऊँ तो वह अपना नाम बताये। इस तरह से मैं आपके उस खोये हुए आदमी को वापस ला सकता हूँ। आप लोग समझ गये न?"

"ठीक।" और वे तुरन्त ही झुक कर और ऑखें बन्द करके एक लाइन में खड़े हो गये। अपने सीधेपन की वजह से उनको उस आदमी पर पूरा विश्वास था कि वह उनके खोये हुए साथी को वापस ला देगा।

वह आदमी फिर बोला — "सो अब हम शुरू करते हैं।"

और अगले ही पल उन्होंने एक सड़ाक की आवाज सुनी।

और उसके बाद आयी दूसरी आवाज कॉपती हुई सी — "मैं परमार्थ गुरू।"

और फिर आयी तीसरी आवाज उस आदमी की "एक"।

कॉपते घुटनों और अधखुली ऑखों से शिष्यों ने देखा कि वहॉ क्या हो रहा था। उन्होंने देखा कि उनके गुरू जी उस डंडी की मार से नीचे गिरे पड़े हैं और कराहते हुए उठने की कोशिश कर रहे हैं।

डरते हुए और अपने मन में घबराते हुए सबने गधे की तरफ देखा। गधा उन सबमें गुरू जी का सबसे पुराना शिष्य था। पर वह क्या करे? पर उसने हालात की गम्भीरता को समझा और फिर अब चाहे जो हो सोच कर एक अच्छी मिसाल कायम करने का विचार किया।

वह यह सोच ही रहा था कि उसके ऊपर भी एक डंडी की मार पड़ी और वह ज़ोर से चिल्लाया — "मैं गधा।"

और उस आदमी ने गिना "दो।"

इस तरह से वह आदमी सबको डंडी मारता गया। पहले सब अपना अपना नाम बोलते गये और बाद में वह सबकी गिनती बोलता गया। इस तरह से उसने उनके छह आदनी गिन दिये।

छह आदमी गिन कर उसने कहा — "अब आप लोग अपनी अपनी ऑखें खोल सकते हैं। अब आप छह हैं। मैंने आपका खोया हुआ आदमी वापस ला दिया। अब आप पैंतालीस सोने के सिक्के मुझे दे दें।"

गुरू जी ने फिर अपने शिष्यों की गिनती की और जब उनको यह विश्वास हो गया कि उनके पॉचों शिष्य वहॉ मौजूद हैं तो उन्होंने

उस आदमी को खुशी से पैंतालीस सोने के सिक्के दे दिये। वह आदमी उन सिक्कों के ले कर वहॉ से मुस्कुराता हुआ चला गया।

गुरू जी ने अपने सब शिष्यों को गले से लगाया और अपनी खुशकिस्मती पर खुश होते हुए मन्दिर की तरफ चल दिये। पर लौटते समय वे अपने आश्रम के पुल पर से हो कर वापस आये नदी में से हो कर नहीं। वे फिर से ऐसा कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते थे।

2 दूसरी घटना – गुरू जी और घोड़ा

बहुत दिनों तक गुरू जी और उनके शिष्य अपने उस धोखेबाज नदी को पार करने की बातें करते रहे जिसमें उन्होंने कितनी सावधानी बरतने के बाद भी एक शिष्य खोया।

फिर उन्होंने भगवान के गुण भी गाये जिसने उनके लिये अपना एक देवदूत भेजा जो उस शिष्य को केवल पैंतालीस सोने के सिक्के ले कर ही वापस ले आया।

इस बीच जिस बुढ़िया का वह आश्रम था उसने आश्रम की सफाई के लिये एक स्त्री को रख लिया था। हालॉकि वह स्त्री अन्धी थी पर उसके कान बहुत अच्छे थे और वह हर बात बड़े ध्यान से सुनती थी। वह हाजिरजवाब भी बहुत थी।

जब वह गुरू जी और उनके शिष्य अपनी पुरानी बातें कर रहे थे तो वह उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी।

सुन कर वह बोली — "मेरे बच्चो तुमको तो बुरी तरह से धोखा दिया गया। तुमने तो वे पैंतालीस सोने के सिक्के बेकार में ही खोये। तुम्हारी मुश्किल कोई बहुत बड़ी मुश्किल नहीं थी।

मैं बताती हूँ तुमको कि तुम लोग जब इस तरह से बाहर जाया करो तो क्या किया करो। जब भी कभी तुम नदी पार करो और लोगों को गिनना चाहो तो एक बहुत ही आसान और सस्ता तरीका है।

वह यह कि जब भी तुम कहीं जाओ तो साथ में गाय का गोबर ले जाओ और जब तुम नदी पार करो तो उसमें थोड़ा सा पानी मिला कर उसको आटे की तरह से मल लो। फिर उसकी एक गोल शक्ल की रोटी सी बना लो और उसको नीचे रख कर उसके चारों तरफ बैठ जाओ।

उसके बाद सावधानीपूर्वक एक के बाद एक अपनी नाक उसमें रखो जिससे उसमें तुम्हारी नाक की एक साफ तस्वीर बन जाये।

उसके बाद तो फिर सब कुछ बिल्कुल आसान है। इस तरह से तुम यह पता कर सकोगे कि कितने लोग हैं और तुम अपने पैंतालीस सोने के सिक्के भी बचा पाओगे।"

गुरू जी तो यह सुन कर उछल पड़े — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। यह स्त्री तो बहुत होशियार है। खरदिमाग, अगली बार जब हम लोग जायें तो तुम गाय का गीला गोबर ले जाना मत भूलना।"

इस बीच कमजोर अपना ही कुछ प्लान बना रहा था। वह बोला — "गुरू जी, हम अपना एक घोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते? क्या आपको याद है कि उस घोड़े पर बैठ कर वह आदमी कितनी आसानी से नदी पार कर गया था। हमारी ज़िन्दगी कितनी आसान होती अगर हमारे पास भी हमारा अपना एक घोड़ा होता तो।"

"हूँ। यह तो है।" गुरू जी ने उसकी बात पर सोचना शुरू किया तो उन्होंने उससे पूछा — "यह घोड़ा कितने का आता होगा कमजोर?"

गधा बोला — "सौ सोने के सिक्के से कम का तो क्या आता होगा गुरू जी। और इतने पैसे तो हमारे पास हैं नहीं।"

गुरू जी बोले — "तो अभी हम इस बात को यहीं छोड़ते हैं फिर देखेंगे।" और ज़िन्दगी ऐसे ही चलती रही।

एक दिन ऐसा हुआ कि आश्रम की गाय जिसको घास के मैदान में चरने के लिये भेजा गया था खो गयी। सो गुरू जी ने अपने शिष्यों को उसको ढूँढने के लिये भेजा।

गुरू जी की सेवा करने के लिये उन शिष्यों ने उसको सब जगह ढूँढा पर वह कहीं नहीं मिली। वे सब आपस में रुआँसे हो कर एक दूसरे से कहने लगे कि अब हम क्या करें। हम बिना गाय के गुरू जी के पास वापस कैसे जायें इससे तो गुरू जी गुस्सा हो जायेंगे।

खरदिमाग बोला — "सुनो भाइयो, मैं तो जब तक वह गाय नहीं मिल जाती आश्रम वापस नहीं जा रहा। मैं उसको ढूँढने के

लिये दूसरे शहर जा रहा हूँ और फिर तीसरे शहर भी अगर मुझे जाने की जरूरत पड़ी तो। अच्छा तो मैं चला।" और यह कह कर वह वहाँ से चल दिया।

उसके साथी लोग भौंचक्के से खड़े उसको जाते हुए देखते रह गये। गधा बोला चलो हम सब लोग आश्रम चलते हैं।

खरदिमाग तीन दिन तक वहाँ से गायब रहा। चौथे दिन वह बिना गाय लिये ही वापस लौट आया पर खुश था।

गुरू जी ने पूछा — "अरे खरदिमाग तुम इतना खुश क्यों हो? तुम आश्रम से चार दिन तक गायब रहे और तुम केवल हँसते हुए वापस लौट रहे हो। गाय कहाँ है?"

खरदिमाग बोला — "गुरू जी, खुशखबरी का ज़रा इन्तजार तो कीजिये। यह सच है कि मैं गाय नहीं ला पाया पर मैं कुछ और ज़्यादा काम की चीज़ पा गया। मुझे एक बहुत ही सस्ता घोड़ा मिल गया।"

इसको सुन कर तो गुरू जी के चेहरे से गुस्सा चला गया और कुछ मुस्कुराहट आ गयी। वह बोले — "क्या सचमुच? यह तो बड़ी अच्छी बात है। मुझे सब बातें खोल कर बताओ यह सब कैसे हुआ।"

खरदिमाग बोला — "मैं आश्रम की गाय ढूँढ रहा था। मैंने पास के कई शहर देखे – लोगों के बागीचे, शहरों के बागीचे, साधुओं के आश्रम। पर वह मुझे कहीं नहीं मिली।

मैंने उसको ढूँढने से कोई जगह नहीं छोड़ी पर जब वह नहीं मिली तो मैं कुछ दुखी हो गया सो मैं एक झील के किनारे चला गया।

वहाँ मैंने आपकी और भगवान की दया से चार घोड़ियाँ एक साथ घास चरती देखीं। उनमें से एक घोड़ी के पास घोड़ी के दो बड़े बड़े अंडे रखे थे। वे अंडे बहुत ही बड़े थे। उनमें से एक अंडा भी दोनों हाथों से नहीं उठाया जा सकता था।

तभी मैंने एक गाँव वाला वहाँ से जाता देखा। मैंने उससे पूछा — "जनाब, आपको पता है कि ये घोड़ियाँ किसकी हैं?"

वह बोला — "पास में ही एक अमीर सौदागर रहता है ये घोड़ियाँ उसी की हैं। ये बहुत ही अक्लमन्द हैं। इतनी अक्लमन्द कि तुम इनको जो कुछ भी सिखाना चाहोगे ये बहुत जल्दी सीख जायेंगी।"

तो मैंने उसको बीच में ही टोका — "क्या वह मुझे एक अंडा बेचेंगे?"

उसने कहा — "मुझे यकीन है कि वह तुमको यह अंडा जरूर बेच देंगे। और मुझे यह भी लगता है कि वह इस अंडे का तुमसे पाँच सोने के सिक्के से ज़्यादा नहीं लेंगे। क्या तुमको नहीं लगता कि एक बहुत ही बढ़िया घोड़े को खरीदने के लिये यह पैसा बहुत ही ठीक है?"

यह सुन कर गुरू जी ने खुशी से ताली बजायी और बोले यह तो वाकई तुमने बहुत ही बढ़िया काम किया। फिर वह अपने दूसरे शिष्यों की तरफ देखते हुए बोले "तुम्हारा क्या विचार है?"

गधा बोला — "अगर उसकी कीमत पॉच सोने के सिक्के ही है तो हम कोई ज़्यादा नुकसान में तो हैं नहीं।"

दूसरे भी चिल्लाये — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है बल्कि यह तो हम लोगों के फायदे में ही रहेगा।"

गुरू जी ने कहा — "खरदिमाग और गधे, मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों जाओ और वहॉ से घोड़ी का सबसे अच्छा अंडा खरीद कर ले आओ। लो ये पॉच सोने के सिक्के ले जाओ और कुछ पैसे अपनी यात्रा के लिये ले जाओ। हम तुम्हारा इन्तजार करेंगे।"

फिर गुरू जी ने दोनों के सिरों पर आशीर्वाद का हाथ रखा और वे दोनों गुरू जी को सिर झुका कर चले गये।

उनके जाने के कुछ समय बाद बेवकूफ[11] कुछ सोचता हुआ गुरू जी से बोला — "गुरू जी, यह तो बहुत ही अच्छी बात है कि हम को इतनी कम कीमत में घोड़े का इतना अच्छा अंडा मिल गया। पर गुरू जी मुझे माफ करें, मेरी एक बात समझ में नहीं आ रही है। मेरा एक सवाल है कि अंडे में से एक घोड़ा कैसे निकलता है?

[11] Fool

गॉव में मैंने अंडे में से मुर्गी के बच्चे तो निकलते देखे हैं। वहॉ मैंने मुर्गी को पॉच छह अंडे भी देते देखे हैं। वे फिर उन पर तब तक बैठती हैं जब तक कि उनमें से बच्चे नहीं निकल आते।

पर अब जैसा कि खरदिमाग बता रहा था कि वह अंडा इतना बड़ा था कि वह दो हाथों से भी नहीं उठाया जा सकता था। तो हम अगर घोड़े के इतने बड़े अंडे पर पचास मुर्गियॉ भी बिठायें तो वे काफी नहीं होंगी। तो गुरू जी हम उस अंडे में से घोड़े को बाहर निकालेंगे कैसे?"

अब यह तो गुरू जी ने सोचा ही नहीं था कि यह सब कैसे होगा। यह सुन कर तो वह गहरे सोच में पड़ गये।

वह बोले — "बेवकूफ यह तो वाकई कुछ गड़बड़ है। मुझे तुम्हारे सवाल के जवाब देने में कुछ समय लगेगा।"

यह कह कर गुरू जी फिर से पालथी मार कर बैठ गये और ध्यान करने लगे। तीन दिन के बाद गुरू जी अपने ध्यान से बाहर निकले और अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे बोले।

"प्यारे शिष्यो, मैंने इस बेवकूफ के सवाल पर सोच विचार किया है। इसका जवाब बहुत ही साफ है।

हममें से एक उस अंडे पर बैठेगा क्योंकि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। अगर हमको एक अक्लमन्द घोड़ा चाहिये तो एक अक्लमन्द आदमी को ही उसके ऊपर बैठना पड़ेगा।

तुम सब लोग बहुत अक्लमन्द हो। तो अब मुझे बताओ कि तुममें से कौन उस अंडे पर बैठेगा?" कह कर उन्होंने अपने सभी शिष्यों की तरफ देखा तो उनकी निगाह मूर्ख[12] पर जा कर ठहर गयी।

मूर्ख ने देखा कि गुरू जी उसी की तरफ देख रहे हैं तो वह हकलाते हुए बोला — "गुरू जी, मैं सारा दिन उस घोड़े के अंडे पर कैसे बैठ सकता हूँ?

मुझे तो नदी से पानी लाना होता है आग जलाने के लिये लकड़ी काट कर रसोई में रखनी होती है। मुझे तो बहुत काम करने होते हैं। मुझे माफ करें पर मैं आपका हुकुम नहीं मान सकता।"

इसके बाद बेवकूफ[13] बोला — "मैं भी यह काम नहीं कर सकता, गुरू जी। मैं तो रात दिन रसोई में ही काम में लगा रहता हूँ। छह आदमी तो हम हैं और फिर नौकर। रसोई में बहुत काम हो जाता है।

मुझे कितने सारी तो सब्जियॉ काटनी पड़ती हैं और फिर कितनी सारी चीज़ें बनानी पड़ती हैं। और गुरू जी आपको तो रोटी पसन्द है सो मुझे वह भी बनानी पड़ती है। मुझे तो रसोई में ही सारा दिन लग जाता है। मेरे ख्याल से मैं तो अंडे के ऊपर बिल्कुल ही नहीं बैठ सकता।"

---

[12] Fool

[13] Idiot

कमजोर[14] बोला — "मैं भी नहीं बैठ सकता गुरू जी। मुझे तो सबसे पहले जागना पड़ता है। पहले मैं नदी जा कर अपने दाँत साफ करता हूँ फिर नहाता धोता हूँ।

आश्रम में आने से पहले मैं ऐसा नहीं करता था सो यह सब अब करने में मुझे बहुत मुश्किल होती है। मुझे तो अपने कपड़े भी अपने आप ही धोने होते हैं।

मुझे माला बनाने के लिये फूल भी चुन कर लाने होते हैं। फिर मैं सारे लैम्प साफ करता हूँ। मुझे तो इतने सारे काम हैं कि मैं तो उनको बताता बताता भी थक जाऊँ। मैं अंडे पर नहीं बैठ सकता गुरू जी मेरे लिये तो यह बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

गुरू जी बोले — "तुम ठीक कह रहे हो। यह तो बड़ी मुश्किल की बात है। गधा और खरदिमाग को भी बहुत काम हैं। केवल एक ही आदमी है जिसको कोई काम नहीं है और वह है मैं।

असल में एक अक्लमन्द घोड़े को पैदा करने के लिये कोई बहुत ही अक्लमन्द आदमी ही उस अंडे पर बैठना चाहिये। ठीक है, अगर और किसी के पास समय नहीं है तो फिर मैं ही बैठता हूँ उसके ऊपर। मैं उसको अपने सिर से ढक कर उसको अपनी छाती से लगा कर बैठ जाऊँगा और एक चादर[15] से ढक लूँगा।

[14] Weakling
[15] Cloth sheet

मैं उसकी बहुत अच्छे से और प्यार से देखभाल करूँगा और अगर भगवान ने चाहा तो उससे एक बहुत ही अक्लमन्द घोड़ा पैदा होगा। यह काम थोड़ा मुश्किल तो है पर अगर हो गया तो बहुत अच्छा रहेगा और मैं इसको जरूर करूँगा।"

इस बीच खरदिमाग और गधा दोनों ढाई घंटा चल कर झील के पास आये। वे चार घोड़े अभी भी वहाँ घास चर रहे थे और उनके आस पास बहुत सारे बड़े बड़े सफेद काशीफल[16] लगे हुए थे।

जैसे ही खरदिमाग ने उनको देखा तो वह चिल्लाया — "देखो वे कितने सारे घोड़े के अंडे। और वे कितने बड़े भी हैं। हमारे गुरू जी तो उनको देख कर बहुत खुश हो जायेंगे। चलो जल्दी से चल कर उस आदमी से मिलते हैं जिसके ये घोड़े हैं।"

और वे तुरन्त ही उस आदमी से मिलने चले गये जिसके वे घोड़े थे।

दोनों साधु भागते भागते उस सौदागर के घर के दरवाजे के अन्दर घुसे और उस सौदागर के पास आये। वह अमीर सौदागर जिसके वे घोड़े थे उस समय अपने बागीचे में बैठा हुआ था।

गधा हाँफते हाँफते बोला — "जनाब, हम कुतरालम[17] से आये हैं और हम साधु हैं। हम घोड़े का एक अंडा खरीदना चाहते हैं।

[16] White pumpkin – see its picture above

[17] Kutaralam – name of the place in Tamil Nadu State of India where Guru Ji lived

आपके पास तो बहुत अच्छे घोड़े है। हम लोग बहुत गरीब हैं आप हमको घोड़े का एक अंडा पॉच सोने के सिक्कों में दे दीजिये।"

यह सुन कर उस सौदागर की ऑखों में चमक आ गयी। वह बुदबुदाया — "ये लोग भी क्या बेवकूफ लोग हैं। ये पॉच सोने के सिक्कों मे केवल एक काशीफल खरीदना चाहते हैं?

देखता हूॅ कि मेरे उन काशीफलों के जिनको ये घोड़े के अंडे समझ रहे हैं कितने पैसे मिलते हैं। और फिर ये काशीफल तो बहुत ही कम देखने में आते हैं और बहुत ही खास हैं मैं उनको इतना भी सस्ता नहीं बेचूॅगा।"

सौदागर को सोचते देख कर गधे ने उसकी तरफ अपनी उॅगली की और बोला — "और हॉ देखना, हमको धोखा देने की कोशिश नहीं करना। हम लोग साधु हैं और अक्लमन्द हैं। हमने इनकी कीमत पहले से ही शहर के किसानों से पता कर ली है।

उन्होंने हमको बताया कि पॉच सोने के सिक्के तो इनकी बहुत ही अच्छी कीमत है।"

वह सौदागर बोला — "तुम लोग बहुत अच्छे स्वभाव के साधु लगते हो और साथ में अक्लमन्द भी। मैं तुमको घोड़े का अंडा पॉच सोने के सिक्कों में दे दूॅगा पर एक शर्त है।"

गधा और खरदिमाग एक साथ बोले — "वह क्या?"

सौदागर बोला — "वह यह कि तुम किसी और को यह नहीं बताओगे कि तुमने घोड़े का अंडा इतना सस्ता खरीदा है। लाओ

पॉच सोने के सिक्के मुझे दो और जो अंडा तुमको अपने आश्रम के लिये सबसे अच्छा और सबसे बड़ा लगे वह ले जाओ।"

खरदिमाग ने तुरन्त ही पॉच सोने के सिक्के उस सौदागर की गोद में डाले और गधे को साथ ले कर नदी के किनारे भाग गया।

वहॉ जा कर उन्होंने इधर उधर देख कर एक सबसे बड़ा काशीफल उठा लिया। कामयाबी की खुशी से पागल से होते हुए वे उस काशीफल को ले कर तुरन्त ही आश्रम की तरफ दौड़ चले। रास्ते भर गधा गुरू जी की जय बोलता चला गया।

"हमारे गुरू जी कितने पढ़े लिखे हैं। उनके पास कितनी ताकतें हैं। मैंने सुना है कि जिनके पास आध्यात्मिक ताकत होती है उनके लिये नामुमकिन काम भी मुमकिन हो जाते हैं। और अब तो हम यह अपनी ऑखों से ही देख रहे हैं।

मैंने पहले कभी अंडे से घोड़ा पैदा होते नहीं सुना था और अब हमारे गुरू जी की ताकत से यह भी सच हो जायेगा। और यह केवल नामुमकिन से मुमकिन ही नहीं बल्कि यह सब इतना सस्ता हो रहा है – केवल पॉच सोने के सिक्कों में। यह तो जादू है जादू।"

खरदिमाग बोला — "तुम किसी काम को उसके नतीजे से ही माप सकते हो। हमारे गुरू जी के बड़प्पन की वजह से ही भगवान ने यह घोड़े का अंडा भेजा है। हमारे गुरू जी महान हैं और अगर हम उनमें अपना विश्वास रखेंगे तो हम भी महान हो जायेंगे।"

तभी वे एक तंग रास्ते पर आ गये सो खरदिमाग ने जो उस अंडे को अपने सिर पर लिये जा रहा था बात करना बन्द कर दिया ताकि ध्यान बॅटने से उसका वह अंडा कहीं गिर न जाये।

हालॉकि वह बहुत ही सॅभाल कर चल रहा था पर फिर भी रास्ते में पड़ी एक डंडी से उसको ठोकर लग ही गयी और वह उस अंडे के साथ सड़क पर चारों खाने चित्त गिर पड़ा।

गधे ने उस अंडे को पकड़ने की कोशिश भी की पर वह उसको पकड़ न सका और वह अंडा धम्म से जा कर एक झाड़ी में गिर गया।

इत्तफाक से एक खरगोश उस झाड़ी में कुछ पत्ते खा रहा था सो जैसे ही वह अंडा उस झाड़ी में गिरा वह खरगोश डर गया और वहॉ से भाग निकला।

खरदिमाग ने जब उसे भागते देखा तो वह भी चिल्लाया — "गधे जल्दी करो, उसको पकड़ो, वह अपना घोड़ा है। वह भागा जा रहा है।"

सो दोनों उस खरगोश के पीछे भाग लिये। वे भागते रहे भागते रहे – पहाड़ी के ऊपर, पहाड़ी के नीचे, घंटों तक। पर खरगोश तो बहुत तेज़ भाग रहा था सो वे उसको पकड़ ही नहीं सके।

गधा बहुत थक गया था सो पहले तो वह एक चट्टान पर गिर गया और फिर एक कॉटों वाली झाड़ी में गिर गया। इससे उसकी बॉह में थोड़ी खरोंचें आ गयीं और सिर में एक गूमड़ा[18] पड़ गया।

वह दुखी सा खरदिमाग की तरफ देखता रहा फिर बोला — "मैं तो थक गया हूँ। मेरा बदन भी दर्द कर रहा है। और अब तो मुझे भूख भी लग आयी है।

हमने तो अपने गुरू जी का घोड़ा भी खो दिया और साथ में उनका पैसा भी। अब हम क्या करें। अब हमको आश्रम वापस चलना चाहिये।"

इस तरह से पैसा और घोड़ा दोनों खो कर वे दोनों भूखे साधु आश्रम की तरफ चल दिये।

जब वे गुरू जी के घर के पास आये तो उनको चिन्ता होने लगी कि अब गुरू जी उनकी बहुत पिटायी करेंगे। चिन्ता की वजह से वे अपनी छाती और पेट दोनों पीटने लगे। वे ऐसे रोने और चिल्लाने लगे जैसे कोई भेड़िया पूनम की रात को रोता और चिल्लाता है।

रोते रोते गुरू जी का नाम लेते हुए वे आश्रम में घुसे। अपना नाम सुन कर गुरू जी उनको बाहर तक लेने आये तो वे भूत की तरह से सफेद पड़ गये और उनके पैरों पर गिर कर बेहोश से हो गये।

[18] Translated for the word "Bump"

एक नौकर तुरन्त ही रसोई में भागा गया और एक कटोरा ठंडा पानी ले कर आया। उसने वह पानी उन दोनों को होश में लाने के लिये उनके चेहरों पर छिड़का। गधा पहले होश में आया।

वह बोला — "ओह वह घोड़ा कितना तेज़ भाग रहा था। मैंने इतनी तेज़ भागने वाला घोड़ा पहले कभी नहीं देखा। वह दो हाथ लम्बा था और खरगोश जैसा दिखायी देता था। उसके चार टॉगें थीं और दो बड़े बड़े कान थे।

वह बहुत छोटा था पर इतनी तेज़ भाग रहा था कि मुझे नहीं लगता कि वह कोई मामूली घोड़ा था। हम दोनों में से कोई भी उस घोड़े को नहीं पकड़ सका। और मैंने उसको पकड़ने की कोशिश भी की तो देखिये कि मेरा क्या हाल हुआ।

इस सबके बाद हमने आश्रम लौटने का विचार कर लिया।"

गुरू जी ने उनकी कहानी सुनी, उस पर कुछ सोचा और फिर उन पर अपनी प्यार भरी नजर डाली और बोले — "तुमने पॉच सोने के सिक्के खो दिये यह कोई अच्छी बात नहीं है। साथ में घोड़ा भी चला गया। यह भी कोई अच्छी बात नहीं।

पर सच पूछो तो यह हमारे लिये अच्छी ही बात है। क्योंकि वह घोड़ा अगर इतनी छोटी उम्र में इतना तेज़ भाग रहा था तो फिर जब वह बड़ा हो जाता तब क्या करता।

मैं तो बूढ़ा हूॅ। मैं ऐसे घोड़े पर यात्रा नहीं कर सकता। मुझे तो यह भगवान की बड़ी मेहरबानी ही लग रही है कि हमको वह

जानवर नहीं मिला नहीं तो उसने तो हमारे लिये कोई बहुत बड़ी मुश्किल ही खड़ी कर दी होती।

चलो इस बात को अब तुम लोग भूल जाओ। अच्छा हुआ कि हम पर केवल पॉच सोने के सिक्के खो कर ही गुजरी। तुम उसकी चिन्ता न करो।"

इस तरह से घोड़े का यह मामला खत्म हुआ और सब आराम करने चले गये।

3 तीसरी घटना – गुरू जी और बैल

कुछ समय बाद गुरू जी ने प्लान बनाया कि वे अपने शिष्यों के साथ एक लम्बी तीर्थ यात्रा पर जायेंगे। जैसे ही उनके शिष्यों ने यह सुना तो उनको तो चिन्ता हो गयी।

गधा बोला — "गुरू जी आप तो बूढ़े और कमजोर हैं। यह तो हमारे लिये बहुत ही शरम की बात होगी अगर हम आपको इतनी दूर पैदल ले कर जायें। कम से कम हमको एक बैल किराये पर ले लेना चाहिये।"

गुरू जी बोले — "जैसा तुम चाहो। मेरी ज़िन्दगी तो अब तुम्हारे हाथों में है।"

सो गुरू जी को राजी होते देख कर वे एक बैल किराये पर लाने के लिये चल दिये।

उनकी किस्मत से पास के एक गॉव में एक किसान रहता था उसके पास एक बैल था जो खेती में इस्तेमाल करने लायक तो नहीं था पर वह यकीनन उनके बूढ़े गुरू जी को तीर्थ यात्रा पर ले जाने लायक ठीक था।

उन्होंने उस बैल को उस किसान से तीन सोने के सिक्के रोज पर किराये पर ले लिया और बड़ी शान से उस आश्रम ले आये।

हालॉकि उस गरमी के मौसम में कुछ ज़्यादा ही गरम हो रहा था फिर भी उन सबने अपना अपना सामान बॉध लिया। खरदिमाग को अपने आश्रम की नौकरानी की सलाह याद थी सो उसने गाय का ताजा गोबर भी अपने साथ रख लिया और फिर वे अपनी यात्रा पर चल दिये।

हालॉकि वे सब सुबह को बहुत जल्दी ही निकल पड़े थे पर फिर भी कुछ देर बाद ही बहुत गरम हो गया। और कुछ देर बाद तो वे फिर एक ऐसी जगह आ पहॅुचे जहॉ घास भी दिखायी नहीं देती थी।

गरम जमीन और पानी की कमी ने उन सबकी हालत बहुत ही खराब कर दी थी। बेचारे बूढ़े गुरू जी तो भूख प्यास से बेहोश ही हो गये और बैल से नीचे गिर पड़े।

उनके शिष्य यह देख कर और भी परेशान हो गये। उन्होंने गुरू जी को उठा लिया और कोई ऐसी जगह देखने लगे जहॉ वह

उनको आराम से लिटा सकें पर कहीं कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था।

आखिर खरदिमाग बोला — "हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है सिवाय इसके कि हम इनको बैल की छॉह में लिटा दें। यहॉ तो हम इनके लिये केवल यही इन्तजाम कर सकते हैं।"

कमजोर ने अपनी चादर निकाली और उसको बैल के नीचे बिछा दी ताकि वे गुरू जी को उस पर लिटा सकें। सबने गुरू जी को बैल के नीचे उस चादर के ऊपर लिटा दिया। मूर्ख और नौकर ने उनको अपने अपने गमछों[19] से हवा करनी शुरू कर दी। धीरे धीरे गुरू जी होश में आ गये।

जैसे जैसे दिन ढलता गया गरमी कम होती गयी और कुछ ठंडी हवा चलती गयी। शिष्यों ने गुरू जी को एक बार और बैल के नीचे आराम दिलवाया और फिर पास के गॉव में आराम कराने के लिये ले गये। इत्तफाक से बैल का मालिक भी इसी गॉव में ही रहता था।

अगली सुबह उन्होंने वह बैल उस बैल के मालिक को वापस कर दिया और उसको तीन सोने के सिक्के भी दे दिये।

किसान उन तीन सोने के सिक्कों को देख कर बोला — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मुझे इतना थोड़ा सा पैसा दो। यह पैसे तो काफी नहीं हैं।"

[19] Gamachhaa is a 1 1/2 - 2 yards long and 2 feet broad cloth which people just keep on to their shoulder to do many miscellaneous jobs. Its cloth can be thick or thin.

गधा बोला — "पर जनाब आप ही ने तो कहा था कि इस बैल के हमको तीन सोने के सिक्के रोज के देने होंगे। अब अपना मन बदलना ठीक नहीं है।"

किसान बोला — "तीन सोने के सिक्के तो इस बैल पर सवार होने के लिये और इस पर यात्रा करने के लिये थे। दोपहर को जब तुम्हारे गुरू जी ने इसके नीचे आराम किया वह इन तीन सोने के सिक्कों में शामिल नहीं था इसलिये तुमको मुझे कुछ सोने के सिक्के और देने होंगे।"

मूर्ख बीच में ही बोला — "यह तो बेकार की बात है। हमने तुम्हारे बैल को एक दिन के लिये किराये पर लिया था। हम उसकी छाया के पैसे तुमको अलग से क्यों दें।"

अचानक किसान गुस्सा हो गया और वह और शिष्य दोनों में गरमागरम बहस छिड़ गयी। बहस सुन कर वहॉ कुछ लोग इकट्ठा हो गये।

कुछ देर बाद वहॉ एक बड़ी उम्र का आदमी आया और उसने पुछा — "क्या मामला है? तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो? तुम लोग अगर मुझे शान्ति से अपनी बात बताओ तो मैं तुम्हारा मामला सिलटाने की कोशिश करता हूॅ।"

खरदिमाग यह सुन कर कुछ शान्त हुआ और उसने उस आदमी को अपना मामला बताया। उस आदमी ने भी उसकी कहानी बहुत ध्यान से सुनी।

उनकी कहानी सुनने के बाद वह आदमी बोला — "तुम्हारा मामला सिलटाने से पहले मैं तुम सबको अपनी ज़िन्दगी की एक घटना बताना चाहूँगा। उसके बाद उस आदमी ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

"यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार मैं भी तुम दोनों नौजवानों की तरह से यात्रा कर रहा था। मेरे पास अपना खाना था और मैं बस उसको बैठ कर खाने के लिये और थोड़ा आराम करने के लिये जगह ढूँढ रहा था।

मुझे सड़क के किनारे एक होटल दिखायी दे गया तो मैं उस होटल के मालिक के पास पहुँचा और उससे पूछा — "जनाब क्या मैं आपके होटल में बैठ कर अपना खाना खा सकता हूँ और थोड़ा सा आराम कर सकता हूँ?"

वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें। पर ध्यान रहे कि अगर आप हमारे होटल से कुछ खरीदेंगे तब आपको उसकी कीमत चुकानी होगी।"

मैंने हाँ में सिर हिलाया, हाथ धोये और अपना खाना खाने बैठ गया। मैं अपना खाना खा रहा था कि हवा वहाँ के ताजा बने हुए पकौड़ों की खुशबू उड़ा कर ले आयी।

उस होटल का एक रसोइया पकौड़े बना रहा था। उसके पकौड़े की खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी। मैं तो बहुत गरीब था सो मैं तो

उनको खरीद नहीं सकता था सो मैं वहीं बैठा रहा और उनकी खुशबू सूँघता रहा और अपने चावल खाता रहा।

जब मैंने अपना खाना खत्म कर लिया तो मैं उस होटल के मालिक को वहाँ खाना खाने देने के लिये धन्यवाद दिया तो वह बोला — "पकौड़ों के पैसे देना मत भूलना।"

मैंने आश्चर्य से पूछा — "पकौड़े? पर पकौड़े तो मैंने खरीदे ही नहीं।"

"देखो मैं तुमको देख रहा था। मैंने देखा कि तुम अपने वह पुराने चावल केवल हमारे पकौड़ों की खुशबू सूँघ कर ही खा सके।"

मेरी तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ क्योंकि मैंने तो पकौड़े खरीदे ही नहीं थे। तभी होटल में काम कर रहे लोगों में से एक आदमी आया जो अपने मालिक की तरफदारी में बोलने आया था।

वह भी यही बोला — "हमारे होटल में बने पकौड़ों की खुशबू की वजह से ही तुम अपना चावल खा सके। इसके लिये तुम्हें कुछ तो फीस देनी पड़ेगी।

लोग जब हमारा पकौड़ा खाते हैं तो उसकी कीमत अक्सर सिक्कों में देते हैं। क्योंकि तुमने केवल उनको सूँघा है तो तुम उसकी कीमत केवल हमको पैसे सुँघा कर ही दे दो।"

मुझे यह सब बड़ा अजीब सा लग रहा था सो मैंने पूछा — "यह मैं कैसे करूँ?"

वह बोला — "तुम मुझे अपना बटुआ दो।"

मैंने उसको अपना बटुआ दिया तो उसने उसको अपनी नाक से लगा कर सूँघा।

उसने उसको कुछ देर तक सूँघा फिर रुक कर बोला — "तुम्हारे इस बटुए में पकौड़ों की खुशबू के बदले में लिये काफी कुछ देने के लिये है। मैं अपनी नाक खोना नहीं चाहता।"

फिर वह आदमी और होटल का मालिक दोनों होटल में अन्दर गये और उन्होंने देखा कि उन पकौड़ों की खुशबू के पैसे दे दिये गये हैं। उसके बाद ही मुझे वहाँ से जाने की इजाज़त मिल सकी। इस तरह से मुझे पकौड़ों को केवल सूँघने के ही पैसे देने पड़े।

सो जैसे मैंने पकौड़ों के सूँघने के लिये पैसे दिये ऐसे ही तुम भी बैल की छाया को इस्तेमाल करने के पैसे दे सकते हो। तुम आवाज से दे सकते हो। बस अपने बटुए को बैल के कान के पास थोड़ी देर के लिये हिलाओ और तुम्हारा उधार चुकता हो जायेगा।"

इस बड़े आदमी की बात सुन कर खरदिमाग को बहुत आश्चर्य हुआ और वह खुश भी बहुत हुआ। उसने तुरन्त अपना बटुआ निकाला और बैल के कान के पास बजा दिया।

वह किसान बोला — "बस बस, काफी है। बैल ने तुम्हारे सिक्कों की आवाज सुन ली है और तुमने बैल की छाया को इस्तेमाल करने के लिये पैसा दे दिया है।"

खरदिमाग और गधा दोनों ने ही उस किसान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने गुरू जी की तरफ चले। सारी शाम वे लोग अपनी इसी घटना के बारे में बात करते रहे।

4 चौथी घटना – गुरू जी और घोड़ा

अगले दिन गुरू जी और उनके सारे शिष्य काफी जल्दी उठ गये क्योंकि वे उतनी गरमी में यात्रा करना नहीं चाहते थे।

कुछ घंटों तक चलने के बाद वे एक बहुत ही छायादार बागीचे में आ पहुँचे। उन सबने वहीं कुछ समय आराम करने का निश्चय किया ताकि वे लोग दोपहर की धूप की गरमी से बच सकें।

इतना चलने के बाद भी मूर्ख को ज़्यादा थकान महसूस नहीं हो रही थी सो वह बागीचा देखने के लिये निकल गया।

चलते चलते उसको एक झील मिल गयी जो ताजा ठंडे पानी से ऊपर तक भरी हुई थी। बस उस पानी को देख कर उसको बहुत अच्छा लगा और उसमें उसकी नहाने की इच्छा हो आयी।

उसने कपड़े उतारे और वह उसमें नहाने के लिये घुस गया। पानी में घुसते ही उसकी ठंडक से वह तरोताजा महसूस करने लगा।

उस झील के किनारे पर ही उस गॉव के देवता ईयानार[20] का एक मन्दिर था। वहॉ के यह देवता भूत प्रेतों को काबू में रखने में भगवान शिव की सहायता किया करते थे सो इसके लिये यह बहुत जरूरी था कि उनको सुन्दर सुन्दर चीज़ों की भेंट चढ़ायी जाये।

दूसरे यह कि उस गॉव के लोगों में यह रिवाज भी था कि वे मिट्टी के घोड़े और हाथी बना बना कर चहारदीवारी की दीवार सजाया करते थे।

जब वह मूर्ख झील में आनन्द कर रहा था तो उसको झील में ऐसी ही एक पत्थर के घोड़े की परछाईं दिखायी दे गयी। वह उसको देख कर डर गया।

हालॉकि वह मूर्ति तो बिना हिले डुले ही खड़ी थी पर पानी में उसकी परछाईं हिल रही थी। मूर्ख ने बिल्कुल बिना हिले डुले खड़े रहने की कोशिश भी की पर फिर भी घोड़े की परछाईं हिलती रही।

उसने उस झील में से बाहर निकलने की कोशिश की तो वह तो और भी ज़्यादा हिलने लगी। उस परछाईं ने शोर तो नहीं मचाया पर वह हिल बहुत रही थी।

डर के मारे वह मूर्ख बहुत सावधानी से झील से बाहर निकला और अपने गुरू जी की तरफ भागा। जब वह अपने ठहरने की जगह आया तो उसके पैर कॉप रहे थे और उसकी सॉस फूल रही थी।

[20] Iyyanar – a god of Tamilians to help Shiv Ji to maintain control on ghosts and spirits.

गुरू जी ने देखा कि उनका शिष्य तो कुछ परेशान है तो वह तुरन्त ही अपनी जगह से उठे और अपने शिष्य की तरफ दौड़े।

उन्होंने उसके कन्धे पकड़े और बोले — "बच्चे, क्या हुआ? तुम तो इतने पीले दिखायी दे रहे हो जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो। मुझे बताओ तो हुआ क्या?"

हॉफते हॉफते मूर्ख बोला — "गुरू जी गुरू जी, पास की एक झील में एक बहुत ही भयानक घोड़ा है। मैं उस झील में चुपचाप नहा रहा था तो वह तो इतना परेशान हो गया जैसे मुझे खा ही जायेगा।

वह तो आपकी मेहरबानी से मैं वहॉ से निकलने में कामयाब हो गया वरना वह तो मेरी आज जान ही ले लेता। यहॉ पर नहाने के लिये वही एक झील है और उसमें यह डरावना जानवर मौजूद है। अब हम क्या करें?"

यह सुन कर गुरू जी कुछ ज़रा ज़्यादा ही परेशान हो गये। उन्होंने अपने दूसरे शिष्यों की तरफ देखा और बोले — "ऐसे हालात से निपटने के लिये ही तो मैंने तुम लोगों को ठीक से पढ़ाया लिखाया है। तो अब तुम लोग बताओ कि हम लोगों को क्या करना चाहिये।"

खरदिमाग तुरन्त बोला — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है गुरू जी। हम लोग तो कितने दिनों से आपको एक घोड़ा देने वाले थे। आज हमको मौका मिला है।

घोड़ा ता बस तभी मुश्किल पैदा करता है जब वह डर जाता है। क्यों न हम उसको पकी हुई दाल खिला कर उससे दोस्ती कर लें और फिर उसको आश्रम ले चलें।"

गुरू जी बोले — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। चलो हम तुम्हारे ही इस विचार को मानते हैं। पर देखो मैं नहीं चाहता कि तुम लोगों में से कोई भी उस पानी में घुसे क्योंकि वह तुमको काट भी सकता है।

हम ऐसा करेंगे कि दाल को उसको पानी में घुस कर खिलाने की बजाय हम वह दाल किनारे पर रख देंगे और फिर देखेंगे कि हम उस घोड़े को उधर की तरफ ला सकते हैं या नहीं।"

गधा बोला — "गुरू जी, हम कुछ ऐसा क्यों नहीं करते जो आसान भी हो और जल्दी भी काम करे। मुझे यकीन है कि वह घोड़ा जरूर ही भूखा होगा। इसलिये क्यों न हम एक घास का गट्ठर पानी के ऊपर पकड़ कर रखें।

जैसे ही वह घास का गट्ठर देखेगा वह उसकी तरफ तुरन्त ही आने की कोशिश करेगा। और जैसे ही वह उधर आयेगा हम उस को पकड़ लेंगे।"

नौकर बीच में ही बोला — "यह भी कुछ ज़रा ज़्यादा ही है। हमको बस इतना करना है कि दूसरे घोड़े की तरह आवाज निकालनी है। अगर हम ठीक से दूसरे घोड़े की आवाज निकाल सके तो वह

समझ जायेगा कि कोई दूसरा घोड़ा बोल रहा है और वह पानी से बाहर आ जायेगा।

अगर यह तरकीब काम नहीं करेगी तो फिर हम एक भैंस को उस झील में घुसा देंगे। घोड़ा उसको देख कर परेशान हो जायेगा और मुझे पूरा यकीन है कि उसको देख कर वह पानी में से बाहर भी जरूर ही निकल आयेगा। दोनों हाल में हम उसको पकड़ने में कामयाब रहेंगे।"

मूर्ख जो अभी तक इन सब हालात पर विचार कर रहा था बोला — "ये सब विचार हैं तो बहुत अच्छे पर ये हालातों को ध्यान में नहीं रखते। सोचो ज़रा। घोड़ा झील में है तो क्यों न हम एक मछली पकड़ने वाला कॉटा बनायें और उसको उसी तरह से पकड़ लें जैसे हम मछली पकड़ते हैं।"

गुरू जी खुशी से बोले — "मूर्ख ने यह तो बहुत ही अच्छा सोचा। मूर्ख, तुम अब इतने मूर्ख भी नहीं लगते जितना कि हम तुम्हें सोचते थे।"

सारे शिष्य चिल्लाये — "हॉ यह बहुत अच्छा विचार है। चलो देखते हैं कि इस तरह से हम घोड़ा पकड़ पाते हैं या नहीं।"

सो सारे शिष्य उत्सुकता से चारों तरफ दौड़े। कुछ पल में ही एक शिष्य चाकू ले आया। दूसरा शिष्य पके हुए चावल का एक पैकेट ले आया। तीसरा शिष्य गुरू जी की चलने वाली छड़ी ले आया।

खरदिमाग ने अपने सिर से अपनी पगड़ी उतारी और सबसे उनकी लायी चीज़ें इकट्ठी कीं। वह सोच रहा था कि गुरू जी की चलने वाली छड़ी को वह मछली पकड़ने वाली डंडी की तरह इस्तेमाल करेगा।

पगड़ी के कपड़े को वह उस डंडी में बाध कर नीचे लटकायेगा। चाकू को वह मछली पकड़ने वाले कॉटे की तरह से इस्तेमाल करेगा और पके हुए चावल को वह मछली पकड़ने वाले चारे की तरह इस्तेमाल करेगा।

जल्दी से उसने उन सब चीज़ों से मछली पकड़ने वाला कॉटा बनाया और घोड़े को पकड़ने के लिये उसे झील के पानी में डाल दिया।

उस कॉटे के बोझ और साइज़ से उस पानी में बहुत सारी लहरें पैदा हो गयीं। इससे उस घोड़े की परछाईं बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी। वह घोड़ा तो इस सबसे बहुत नाराज दिखायी देने लगा। उसकी टॉगें झील में चारों तरफ जा रहीं थीं। उसका सिर भी बहुत गुस्से में इधर उधर हिलता दिखायी दे रहा था।

यह सब देख कर सारे शिष्य डर गये और वे वहीं झील के किनारे पर गिर गये। केवल खरदिमाग ही नहीं गिरा। वह मछली पकड़ने वाली डंडी मजबूती से पकड़े रहा जब तक सारी लहरें शान्त नहीं हो गयीं।

उसने अपने गुरू भाइयों से कहा — "डरो नहीं। घोड़ा अब शान्त हो गया है। अगर हम थोड़ा चुपचाप रहें और धीरज रखें तो मुझे यकीन है कि हम उसको पकड़ने में कामयाब हो जायेंगे। सो थोड़ा इन्तजार करो।"

इस बीच में पके हुए चावल देख कर एक मछली उस चारे की तरफ आ गयी और उस चावल को खाने लगी। इससे वह कॉटा भी खिंचने लगा।

खरदिमाग चिल्लाया — "घोड़ा चारा खा रहा है। जल्दी मेरी सहायता के लिये आओ। यह तो कोई बड़ा घोड़ा लगता है। मुझे लगता है कि किनारे पर लाने के लिये हम सबको उसे खींचना पड़ेगा।"

एक पल में ही सारे शिष्य वहॉ जमा हो गये। दो शिष्यों ने वह छड़ी पकड़ी। दो शिष्यों ने उन आगे वाले शिष्यों को पकड़ लिया और उनको अपनी पूरी ताकत लगा कर खींचने लगे।

जब वे इस तरह से उस मछली के कॉटे को खींच रहे थे तो वह चावल की पोटली खुल गयी और सारे चावल पानी में बिखर गये। चाकू भी खुल गया और जा कर उन सरकंडों में उलझ गया जो झील की तली में उगे हुए थे।

खरदिमाग खुशी से बोला — "ओह हमने घोड़ा पकड़ लिया। उसने चारा खा लिया है। अब हम सबको मिल कर उसे खींचना है बस। एक, दो, तीन, खींचो।"

सो सबने मिल कर उस कपड़े को खींचा तो अचानक कपड़ा फट गया और दो हिस्सों में बॅट गया। खरदिमाग और दूसरे शिष्य इस धक्के से नीचे गिर पड़े।

कमजोर चिल्लाया — "ओह। इस तरीके के अलावा कोई आसान तरीका भी होना चाहिये।" फिर वे सब अपनी अपनी चोटें सहलाते हुए उठे।

एक गॉव वाला दूर से उनकी ये सब हरकतें देख रहा था यह सब देख कर वह उनके पास आया और उनसे पूछा — "जनाब, आप लोग यह क्या कर रहे हैं?"

खरदिमाग घोड़े की परछाईं की तरफ इशारा करते हुए बोला — "हम लोग यहॉ एक घोड़ा पकड़ने आये हैं।" फिर उसने अपना प्लान बताया कि वह कैसे उस घोड़े को पकड़ने वाले थे।

गॉव वाला बोला — "तुम सब बेवकूफ हो। यह तो केवल उस मिट्टी के बने घोड़े की परछाईं है। यह असली घोड़ा नहीं है। देखो मैं दिखाता हूॅ तुम लोगों को।"

कह कर वह मन्दिर की चहारदीवारी पर चढ़ गया और उस घोड़े की मूर्ति को अपनी चादर से ढक लिया। फिर हॅस कर उनसे पूछा — "अब तुमको क्या दिखायी दे रहा है?"

गधा बोला — "अरे यह तो बड़ा आश्चर्य है। वह घोड़ा तो गायब हो गया और अब तो हमें बस तुम्हारी चादर का रंग ही दिखायी दे रहा है। अब हम क्या करें? हमारे गुरू जी को तो घोड़े

की बहुत जरूरत थी और हम अब उनको फिर से नाउम्मीद कर देंगे।"

हमारे गुरू जी बहुत बूढ़े और कमजोर है। उनको घोड़ा यात्रा करने के लिये चाहिये ही। पहले हमने पॉच सोने के सिक्के एक घोड़े के अंडे पर खर्च किये पर हमारी किस्मत खराब कि वह अंडा हमसे टूट गया और उसमें से घोड़ा निकल कर भाग गया।

फिर हमने एक बैल किराये पर लिया तो उसके मालिक ने न केवल हमसे उसका किराया ही ज़्यादा लिया बल्कि उसके साये को इस्तेमाल करने के पैसे भी मॉग लिये।

हमने इन सब पर अपने गुरू जी का इतना पैसा बेकार किया है कि अब हमारी इस काम करने को करने की इच्छा ही नहीं रह गयी है। लेकिन फिर भगवान की दया से हमको एक घोड़ा झील में मिला तो हमने उसको पकड़ने की कोशिश की तो अब वह भी गायब हो गया।

हम क्या कर सकते हैं अपने गुरू जी के लिये। हम लोग कितने बेकार के शिष्य हैं। हमारे गुरू जी भी कितने बदकिस्मत हैं।"

यह सब सुन कर उस गॉव वाले का दिल पिघल गया। वह अपने मन में सोचने लगा कि ये लोग भी बेशक कितने बेवकूफ लोग हैं पर अच्छे और सीधे सादे हैं और साथ में अपने गुरू के लिये भी इनके दिल में कितना सेवा भाव है। मैं ऐसा करता हूॅ कि मैं इनको एक घोड़ा दे देता हूॅ और इनकी परेशानी दूर कर देता हूॅ।

सो उसने उनसे कहा — "ओ भले साधुओ। मेरे पास एक पुराना घोड़ा है। मेरा विचार है कि तुम लोग उसको अपने गुरू जी की यात्रा के इस्तेमाल के लिये ठीक पाओगे।

तुम लोगों को मुझे उसके लिये कोई पैसा देने की जरूरत नहीं है। मैं तुम लोगों को उसे खुशी से दान देता हूँ। तुम लोग मेरे घर चलो और मैं उस घोड़े को तुमको दे दूँगा।"

यह सुन कर तो वे पाँचों शिष्य बहुत ही खुश हुए और तुरन्त ही उस गाँव वाले के पीछे पीछे उसके घर चल दिये।

वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि उस बूढ़ी घोड़ी के ऊपर कोई जरूरी साज[21] भी नहीं था सो उसका मालिक और वे सब किसी ऐसी चीज़ की तलाश करने लगे जिसको वे उस साज के बदले में इस्तेमाल कर सकें।

एक घंटे के भीतर भीतर उस घोड़ी पर एक बिल्कुल नयी तरह का साज सज गया। उस पर फूस की लगाम थी और पुराने कपड़े के थैलों की बनी हुई जीन थी। यह सब यात्रा के लिये तो ठीक था पर देखने में बहुत ज़्यादा सुन्दर नहीं लग रहा था।

खरदिमाग ने ज्योतिष का पंचांग देखा कि वे उसको उस गाँव वाले के घर से कब ले जा सकते थे और गधा गुरू जी को लाने दौड़ा ताकि वह उनको उस घोड़े को दिखा सके।

[21] Translated for the "Saddle" etc. See its picture above,

कुछ घंटों में ही गुरू जी उस घोड़ी पर बैठे हुए थे। उन सबकी यह पहली यात्रा देखने के लिये सारा गॉव इकट्ठा था। गुरू जी के शिष्यों में से एक शिष्य ने घोड़ी की लगाम सॅभाली दूसरे ने उसको पीछे से धकेला दिया और दो शिष्य उनकी सुरक्षा के लिये उनके दोनों तरफ खड़े हो गये।

खरदिमाग ने आगे की तरफ खड़े हो कर बड़ी शान से घोषणा की — "हमारे गुरू जी आ रहे हैं। उनकी इज़्ज़त करो और एक तरफ को खड़े हो जाओ। हमारे गुरू जी आ रहे हैं।" इस तरह से यह जुलूस इस शानदार तरीके से वहॉ से चला।

गुरू जी और उनके शिष्य दोनों ही बहुत खुश थे। आखिर उनके पास अब उनका अपना घोड़ा था और अब उनकी यात्रा में कोई मुश्किल नहीं आने वाली थी – या उनको ऐसा लगा।

वे चले ही थे कि अजीब से कपड़े पहने एक आदमी उस जुलूस के सामने आ गया और उस घोड़े को रोक लिया।

शिष्य यह देखते ही कुछ दुखी हो गये और चिल्लाये — "यह तुम क्या कर रहे हो? तुमने हमें रोक क्यों लिया?"

वह आदमी बोला — "मैं टैक्स लेने वाला हूॅ। तुम्हारा यह जुलूस हमारी सड़क पर जा रहा है तो इसका मतलब साफ है कि तुम को इसका टैक्स देना पड़ेगा। मुझे पॉच सोने के सिक्के दो नहीं तो मुझे तुम्हारे खिलाफ कुछ कार्यवाही करनी पड़ेगी।"

खरदिमाग को बहुत गुस्सा आ गया तो उसने उसको डॉटा — "यह क्या बात हुई? तुम हमारे गुरू जी से केवल घोड़े की सवारी के ऊपर टैक्स लेना चाहते हो?

वह बहुत बूढ़े हैं और कमजोर भी। वह बहुत दूर तक पैदल नहीं जा सकते इसी लिये हम उनको घोड़े पर बिठा कर ले जा रहे हैं। मैंने तो अभी तक इस बात के लिये किसी को टैक्स लेते सुना नहीं। यह तो गलत है और अधार्मिक भी।"

पर इस भाषण का उस टैक्स वाले आदमी पर कोई असर नहीं पड़ा। वह बोला — "ओ बवकूफो, तुम्हारी यह हिम्मत कैसे हुई कि तुम लोग मुझे ललकारो। धार्मिक और अधार्मिक, तुम लोग यहॉ से एक इंच भी नहीं हिलोगे जब तक तुम लोग इसका टैक्स न दे दो।"

कह कर उसने नीचे पड़ी एक डंडी उठायी और उठा कर रास्ते में घोड़े के आगे रख दी।

काफी देर तक गुरू जी धीरज रखे रहे पर फिर उन्होंने उस टैक्स लेने वाले को टैक्स देने से मना कर दिया और उस टैक्स लेने वाले ने उनको आगे जाने से मना कर दिया।

पर जब शाम हो आयी तो गुरू जी ने कहा — "गधे, इसको पॉच सोने के सिक्के दो दो। जब तक हम इसको इसके पैसे नहीं देंगे यह हमको जाने नहीं देगा।"

गुस्से में भर कर गधे ने उसको पॉच सोने के सिक्के दे दिये और फिर वह जुलूस पहले की तरह आगे की तरफ चल दिया।

गुरू जी ने सोचा "मेरी भी क्या किस्मत है। अगर मैंने यह पॉच सोने के सिक्के इसको न दिये होते तो मैं पॉच सोने के सिक्के ज़्यादा अमीर होता। मैंने अपने शिष्यों को इस जानवर को अपने आश्रम में लाने ही क्यों दिया। साफ लगता है कि यह हमारा कोई अच्छा फैसला नहीं था।"

तभी वहीं सड़क पर एक यात्री बैठा था वह भी उस जुलूस में शामिल हो गया। सो गुरू जी ने अपनी दुखभरी कहानी उसको सुनायी —

"जनाब, मैं तो अपनी यात्रा हमेशा पैदल ही करता था। पर अभी हाल ही में मेरे शिष्यों को लगा कि मैं कमजोर हो गया हूँ सो उन्होंने मेरे लिये इस घोड़े का इन्तजाम किया। हम लोग खुशी से जा रहे थे कि हमारे साथ एक बहुत ही खराब घटना घटी।

यह टैक्स वाला आदमी हमारे सामने सड़क पर आ गया और इसने हमको जाने से मना कर दिया जब तक इसने हमसे पॉच सोने के सिक्के नहीं ले लिये।

इसने कहा कि सड़क पर घोड़े पर सवार हो कर चलने पर टैक्स लगता है। इस दुनियॉ का क्या होने वाला है मालूम नहीं।"

यात्री ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा — "प्यारे साधु, यह दुनियॉ अब वह दुनियॉ नहीं है जिसको तुम जानते थे। आजकल तो पैसा ही गुरू है और पैसा ही भगवान है।

आजकल की दुनियॉ में अगर तुम्हारे पास पैसा हे तो कोई लाश भी तुम्हारे पीछे चलेगी और अगर तुम गधे भी हो तो भी तुम बहुत ही ऊचे किस्म के आदमी हो। और अगर तुम्हारे पास पैसा नहीं है तो तुम्हारी सारी बुराइयॉ सामने आ जायेंगीं। क्या करें आजकल के समय में पैसा ही सब कुछ है।"

गुरू जी कुछ दुखी हो कर बोले — "यह बहुत बुरी बात है। आजकल अगर कोई दस पैसे भी कहीं पड़े देखता है तो उठा कर रख लेता है।"

यात्री ने पूछा — "पर इसमें बुरी बात क्या है? हर पैसे की कीमत है। और कोई पैसा गन्दी जगह पड़े होने से बदबूदार तो नहीं हो जाता। मैं आपको इसकी एक कहानी सुनाता हूॅ।

"यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है कि एक राजा था जो अपने राज्य के आदमियों को टैक्स के लिये बहुत तंग करता था।

उसकी इस टैक्स इकट्ठा करने के पागलपन की हद यहॉ तक पहुॅची कि उसने पेशाब करने पर भी टैक्स लगा दिया और इसको इकट्ठा करने का जिम्मा अपने बेटे को सौंपा। उसका काम यही था कि वह जैसे ही लोगों को पेशाब करते देखे तो उनसे टैक्स वसूल कर ले।

राजकुमार ने अपने पिता से शिकायत की कि यह तो बड़ी खराब बात है। मैं लोगों को पेशाब करने के इन्तजार में क्यों खड़ा रहूॅ? यह तो एक राजकुमार के लिये बहुत ही नीच काम है।"

राजा ने कहा — "थोड़ा धीरज रखो बेटा। तुम अपना काम करो और फिर जल्दी ही तुम देखना कि क्या होता है।"

कुछ दिन बीत गये। हालॉकि राजकुमार यह करता तो रहा पर फिर भी राजकुमार को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था और न ही उसको कोई उसका असर दिखायी दे रहा था।

यह देख कर एक दिन राजा ने उसको अपने खजाने में बुलाया और उसको चमकते हुए सोने के सिक्कों का वह ढेर दिखाया जो उसने इस तरह से इकट्ठा किया था।

वह बोला — "मेरे बेटे, ज़रा इन सब सिक्कों को सूँघो तो।"

राजकुमार ने उनको सूँघा तो उसकी समझ में नहीं आया कि उसका पिता इस बात से उसको क्या बताना चाह रहा था।

वह बोला — "इसमें तो कोई बू नहीं है न। इसमें तब तो बू थी जब मैंने इनको इकट्ठा किया था पर अब तो इनमें कोई भी बू नहीं है।"

राजा हॅसते हुए बोला — "अब तुम समझे। पेशाब में बदबू होती है पैसे में नहीं। हम पैसे को कहीं से कहीं ले जा सकते हैं। पैसे में कभी बू नहीं आती।"

गुरू जी बोले — "अच्छी कहानी है और यह तो सच से भी दूर नहीं है।"

गुरू जी और वह यात्री चलते जा रहे थे और बात करते जा रहे थे। जल्दी ही शाम हो गयी। वे लोग एक छोटे से गॉव के पास आ गये तो गॉव के बाहर ही उन्होंने रात गुजारने का विचार किया।

जब वे सुबह सवेरे उठे तो उन्होंने देखा कि उनका घोड़ा तो गायब है।

गधा जल्दी से नहाया और गॉव में घर घर जा कर अपने घोड़े को ढूँढने लगा। जल्दी ही उसको वह घोड़ा एक मकान के आगे एक पेड़ से बॅधा मिल गया।

उस घर का मालिक एक किसान था वह अपने घर के बरामदे में लेटा हुआ था सो गधा उसके पास गया और बोला — "जनाब यह तो हमारा घोड़ा है। कल रात यह हमारे यहॉ से गायब हो गया था। आप इस घोड़े को ईमानदारी से हमें दे दें।"

वह किसान बोला — "रात भर यह घोड़ा मेरे मैदान में आजादी से घूमता रहा। तुम्हारे इस बेवकूफ घोड़े ने मेरी आधी से ज़्यादा फसल बरबाद कर दी। अब इसको मैं तुमको नहीं देने वाला।"

वह किसान बहुत गुस्सा था और उसने गधे को कुछ और बुरे शब्द भी कहे। शिष्य डर गया और इस मामले को उस गॉव के सरपंच के पास ले जाने का इरादा किया।

अगले दिन सारे दिन दोनों आपस में काफी बहस करते रहे और फिर गॉव के सरपंच ने गुरू जी की तरफ देखते हुए अपना फैसला सुनाया —

"क्योंकि तुम्हारे घोड़े ने इस किसान की फसल खराब की है इसलिये तुमको इस किसान को दस सोने के सिक्के देने पड़ेंगे। इतना हरजाना काफी है। इसको दस सोने के सिक्के दे दो और अपना घोड़ा ले जाओ।"

सो उनको उस किसान को दस सोने के सिक्के देने पड़े। सिक्के दे कर और अपना घोड़ा उस किसान से वापस ले कर वे फिर आगे बढ़े।

अब जब वे लोग उस गॉव से आगे चले तो गुरू जी ने दुखी हो कर कहना शुरू किया — "जिस दिन से यह घोड़ा हमारे पास आया है उसी दिन से हमारा पैसा बेकार में ही खर्च हो रहा है और साथ में मुझे बेइज़्ज़ती भी बरदाश्त करनी पड़ रही है।

हमको इस घोड़े को निकाल देना चाहिये। इसको अपने पास रखना ठीक नहीं है। मैं तो इस सबको सहने की बजाय पैदल चलना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

सारे शिष्य एक साथ बोले — "नहीं नहीं गुरू जी, ऐसा मत सोचिये। आप चल नहीं सकते। आप बहुत बूढ़े हैं। इसके अलावा अब आप बड़े आदमी भी हो गये हैं।

कई बार आप इस घोड़े पर बैठ कर सवारी कर चुके हैं। अब अगर पहले की तरह से गरीब हो जायेंगे तो यह तो आपके लिये बड़ी बेइज़्ज़ती की बात होगी। लोग आपके ऊपर हॅसेंगे और फिर वह हमसे बरदाश्त नहीं होगा।"

एक पंडित जी उधर से गुजर रहे थे। गुरू शिष्यों की ये बातें उन्होंने सुनी तो वह रुक कर उनसे बोले — "तुम लोगों को ये सब मुश्किलें इसलिये आ रही हैं क्योंकि तुम्हारे घोड़े पर एक बुरा जादू पड़ा हुआ है।

मुझे मालूम है कि ऐसा बेकार का खर्चा कितना परेशान करता है पर अगर तुम लोग मुझे पॉच सोने के सिक्के दो तो मैं इस घोड़े पर पड़ा यह बुरा जादू हटा सकता हूँ।"

सभी शिष्य बोले — "गुरू जी, हमारे खयाल से बजाय घोड़े को हटाने के इन पंडित जी से इस पर पड़ा यह बुरा जादू ही हटवा दीजिये।"

भुनभुनाते हुए गुरू जी राजी हो गये और पंडित जी ने उस बुरे जादू को हटाने के लिये जरूरी सामान इकट्ठा करना शुरू कर दिया। जल्दी ही वह कुछ डंडियॉ, कुछ फूल और कुछ रंगीन पाउडर ले कर आये और फिर उन्होंने घोड़े के चारों तरफ घूम घूम कर मन्त्र पढ़ना शुरू किया।

अचानक उन पंडित जी ने चिल्लाना शुरू किया और पत्ते और वे रंगीन पाउडर फेंकना शुरू किया। वह तीन बार घोड़े के चारों तरफ भागे और कई बार घोड़े की पीठ को थपथपाया।

आखिर उन्होंने घोड़े का कान पकड़ा और शिष्यों से कहा — "इसका बुरा जादू इस घोड़े के कान में है। अगर हम इसका यह कान निकाल दें तो इसका यह जादू निकल जायेगा।"

शिष्य लोग पंडित जी के इस कारनामे से बड़े प्रभावित हुए। खरदिमाग और गधा तुरन्त ही एक बड़ा सा चाकू ले आये। पंडित जी ने उसे तेज़ किया और उस घोड़े का कान काट दिया। घोड़ा बहुत ज़ोर से चीखा और बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

खरदिमाग ने उसका वह कान उठाया और उसको एक गहरे गड्ढे में गाड़ कर उसके ऊपर नीम की एक शाख लगा दी। जब वह लौटा तो उसने देखा कि घोड़े के कान की मरहम पट्टी हो चुकी है और सब लोग वापस जाने के लिये तैयार खड़े हैं।

लौटने का रास्ता लम्बा था पर उसमें कोई खास घटना नहीं घटी। सब थक गये थे सो आश्रम आ कर वे सब नहाये धोये और जल्दी ही खाना खा पी कर सो गये।

5 पॉचवीं घटना – गुरू जी की मौत की भविष्यवाणी

अगली सुबह गुरू जी अपनी पिछली यात्राओं के बारे में सोच रहे थे। उनका घोड़ा जिसके कान पर अभी भी पट्टी बॅधी हुई थी लॅगड़ाता हुआ कुछ दूर हरी घास की खोज में इधर उधर घूम रहा था।

उसको देख कर गुरू जी ने सोचा — "यह घोड़ा कितना बदसूरत है। जब यह पहली बार आया था तब मैं इसको लेने के लिये तैयार था क्योंकि तब यह मुफ्त का था पर अभी तो मैंने इस के ऊपर कितना पैसा खर्च किया। भगवान की क्या माया है।"

उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे कहा — "अगर तुम लोग इस घोड़े में ज़िन्दगी देखो तो यह तो रेगिस्तान में एक मृगतृष्णा[22] की तरह है। यह तो है ही नहीं। कोई भी अच्छी चीज़ बुरी चीज़ के बिना नहीं होती। कोई खुशी बिन दुख के नहीं होती।"

फिर उन्होंने उस घोड़े की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब इस बदसूरत घोड़े को ही ले लो। यह घोड़ा हमारे पास एक भेंट के रूप में आया था तब हमें यह बहुत अच्छा लगा था।

पर हमारे अनुभव ने हमको सिखा दिया कि कोई खुशी बिना दुख के नहीं मिलती। हमको केवल एक बूँद शहद दिया गया था पर उसके साथ में हमें कितनी सारी कड़वाहट भी मिली।

हर फल में उसका छिलका और बीज होते हैं। और यह तो स्वाभाविक है। हम इसको बदल तो नहीं सकते पर हम इससे कम से कम बच तो सकते हैं।

मैं चाहता हूँ कि तुम लोग इस घोड़े को इसके मालिक को वापस कर आओ। उसके बाद ही हम लोग शायद खुश और शान्ति से रह पायेंगे।" सारे शिष्य गुरू जी के इन शब्दों से बहुत दुखी हुए।

गधा बोला — "गुरू जी, ऐसा मत कहिये। हमने यह घोड़ा खरीदा भी नहीं है और न ही हमने इसको खरीदने की कोशिश की

[22] Translated for the word "Mirage" – mirage is the situation which creates a confusion of water in a desert and the person continues to run after it thinking that there is water, but can never get it as the water is not there.

है। एक भले गॉव वाले ने इसे हमको भेंट में दिया था सो यह तो हमको भगवान का दिया हुआ प्रसाद है।

आप इसको ले कर इतने परेशान क्यों हैं। अगर हम इसको वापस करेंगे तो हम भगवान की इच्छा के खिलाफ जायेंगे। इसके अलावा पंडित जी ने इसके ऊपर जो बुरा जादू था वह भी निकाल दिया है सो अब हमको उसे रखे रहना चाहिये।"

अपने शिष्यों का पक्का इरादा देख कर गुरू जी घोड़े को रखने पर राजी हो गये और बोले — "ठीक है। पर देखो अब उसको इधर उधर मत घूमने देना। इससे वह दूसरों को तंग करेगा और फिर खर्चा करायेगा। हमको उसके लिये एक छत डलवा कर उसमें अपने आश्रम में बॉध कर रखना चाहिये।"

शिष्य तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गये कि आखिरकार उनके गुरू जी इस बात के लिये तैयार हो गये हैं कि घोड़े को रख लिया जाये।

गधा तो उछलते हुए बोला — "आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये गुरू जी। मैं दस मिनट में उसके लिये एक बहुत अच्छा शैड[23] बना दूँगा जो उस घोड़े को लिये बिल्कुल ठीक

[23] A simple shed is just a roof on four pillars, may or may not be surrounded by wooden walls. See its picture above.

रहेगा। बस मुझे दो बहुत बड़ी पेड़ की शाखें चाहिये।"

कह कर उसने एक बड़ा सा चाकू लिया और आश्रम के बाहर की तरफ चला गया और एक बरगद का पेड़[24] ढूँढा।

वहाँ उसने अपने काम के लिये ठीक से शाखें ढूँढी और बस उस पेड़ पर चढ़ गया। वह एक शाख पर बैठ कर उसको काटने लगा।

उसी समय वहाँ से एक ब्राह्मण गुजर रहा था। उसने अपने सिर के ऊपर कुछ आवाज सुनी तो ऊपर देखा कि वहाँ क्या हो रहा था। उसने देखा कि एक नौजवान जिस शाख पर बैठा है उसी शाख को काट रहा है।

यह देख कर तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो ओ बेवकूफ गधे? यह शाख कट कर गिरेगी तो साथ में तुम भी गिर जाओगे।"

गधा इस समय घोड़े के लिये शैड बनाने के उत्साह में था सो उसको उस ब्राह्मण की यह बात अच्छी नहीं लगी।

वह बोला — "ओ ब्राह्मण, तुम मुझे यह बुरी बात कह कर परेशान मत करो। मुझे मेरे गुरू जी की शान्तिपूर्वक सेवा करने दो।

[24] Banyan tree – an old banyan tree can be a very large tree. It can have hundreds of trunks out of which is almost impossible to know which trunk is original. In India, in Calcutta, there is one oldest Banyan tree under which once a king's army had rested.

तुम्हारी यह सलाह तो मेरा केवल ध्यान ही हटा रही है। इसलिये इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ कुछ करूँ तुम यहाँ से चले जाओ।"

यह जवाब सुन कर वह ब्राह्मण समझ गया कि वह किसी पागल आदमी से बात कर रहा था। उसने अपने कन्धे उचकाये और बिना कुछ कहे वहाँ से आगे चला गया।

गधा फिर से अपना काम में जुट गया। अब वह और ज़्यादा उत्साह और ताकत से काम कर रहा था। जल्दी ही पेड़ की वह शाख कट गयी और धम्म से जमीन गिर पड़ी और उसके साथ गिर पड़ा गधा भी। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसको ज़्यादा चोट नहीं आयी।

यह देख कर गधे ने सोचा — "यह ब्राह्मण तो कोई अच्छा ज्योतिषी लगता है। उसने कहा था कि जब यह शाख कट कर गिरेगी तो मैं भी गिर पड़ूँगा। वही हो गया। यह आदमी मेरे गुरू जी के लिये बहुत अच्छा रहेगा। मैं इस आदमी से बात करके देखता हूँ।"

यह सोच कर जमीन पर से उठ कर उसने अपनी धूल झाड़ी, अपना तेज़ किया हुआ चाकू नीचे से उठाया और उस आदमी के पीछे भाग लिया।

वह ब्राह्मण एक गाँव के पास पहुँच रहा था जब उसने अपने पीछे किसी के पैरों की आहट सुनी। उसने देखा कि यह तो वही पागल आदमी था जो पेड़ की जिस शाख पर बैठा था उसी शाख को

काट रहा था और अब उसके पीछे हाथ में चाकू लिये दौड़ा चला आ रहा था।

यह देख कर वह डर गया और गॉव के बाजार में घुस गया और चिल्लाया — "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। एक पागल मेरे पीछे चाकू ले कर दौड़ा चला आ रहा है। मुझे बचाओ।"

पर गधा बहुत तेज़ भाग रहा था सो कुछ पल में ही उसने उस ब्राह्मण को पकड़ लिया।

चाकू के डर की वजह से वह ब्राह्मण बेचारा वहीं का वहीं चुपचाप खड़ा रह गया। उसके चेहरे से डर साफ झलक रहा था। पर उसके आश्चर्य का ढिकाना न रहा जब उसने देखा कि उस नौजवान ने अपना चाकू फेंक दिया और जमीन पर लेट कर उसने उसके पैर छुए।

उसने उस ब्राह्मण की तारीफ करते हुए कहा — "आप तो इतने ज़्यादा पढ़े लिखे हैं और साथ में भविष्य भी बहुत ठीक बताते हैं। मेरा आपसे एक छोटा सा सवाल है। मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

अब तक उस ब्राह्मण का डर पूरी तरह से दूर नहीं हुआ था फिर भी वह बोला — "हॉ हॉ कहो। जो भी तुम चाहो। तुम क्या जानना चाहते हो?"

गधा बोला — "मैं गुरू परमार्थ जी का शिष्य हूँ। मैं उनको बहुत प्यार करता हूँ पर अब वह बहुत बूढ़े होते जा रहे हैं। वह

जब मरेंगे तब उनके मरने का मुझे कैसे पता चलेगा? अगर आप मुझे यह बता दें तो मुझे कुछ शान्ति हो जाये।

ब्राह्मण ने कुछ ध्यान सा करते हुए कहा — "आसन शीतम जीवन नाशम", यानी जब बैठने की जगह ठंडी हो तब आत्मा बाहर चली जाती है।"

गधे ने सोचा कि यह कितना पढ़ा लिखा आदमी है। इसका मतलब यह है कि जब भी हमारे गुरू जी अपनी बैठने की जगह ठंडी महसूस करेंगे वह तभी मरेंगे।

ब्राह्मण फिर बोला — "तुमको और कुछ पूछना है?"

गधा बड़ी इज़्ज़त के साथ बोला — "नहीं जनाब। मैं आपके जवाब से बिल्कुल सन्तुष्ट हूँ। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

यह सुन कर ब्राह्मण चला गया।

ब्राह्मण के जाने के बाद गधा वापस बरगद के पेड़ के नीचे आया और फिर दूसरी शाख काटने लगा। दोनों शाख काट कर वह उनको घसीटता हुआ आश्रम ले गया।

पर उसके दिमाग में अभी तक उस ब्राह्मण का कहा घूम रहा था सो उसने घोड़े का शैड भी खत्म नहीं किया और गुरू जी के पास पहुँच गया।

उसने गुरू जी को प्रणाम किया और उनसे कहा — "गुरू जी मैं अभी अभी गॉव के एक ब्राह्मण से मिला था। वह तो कितना पढ़ा लिखा था। और उसकी भविष्यवाणी तो कितनी सही थी। उसको

यह भी पता है कि जिस समय आप यह दुनियॉ छोड़ेंगे तो उसके क्या लक्षण होंगे।"

गुरू जी बीच में ही बोले — "अच्छा बताओ तो क्या लक्षण होंगे मेरे दुनियॉ छोड़ने के। मैंने भी इस आदमी के बारे में काफी सुना है। यह बहुत ही अच्छा ज्योतिषी है और इसको हमारे धर्म की सारी किताबों की बहुत अच्छी जानकारी है

मुझे पूरा विश्वास है कि जो कुछ भी इसने कहा होगा वह सब ठीक ही कहा होगा। पर तुम मुझे यह तो बताओ तो कि इसने मेरे बारे में कहा क्या।"

गधा बोला — "गुरू जी उसने कहा कि जब बैठने की जगह ठंडी हो तब आत्मा बाहर चली जाती है।"

गुरू जी बोले — "अच्छा तो उसने कहा "आसन शीतम जीवन नाशम"। बेटा यह तो बहुत ही मशहूर श्लोक है। आसन शीतम का एक मतलब यह भी है जब हमारी एक तरफ ठंडी होती है तब जीवन का नाश होता है। मुझको बहुत सावधान रहना चाहिये।

मुझे पूरा विश्वास है कि उस ब्राह्मण की बात जरूर ही सच निकलेगी। आगे से मैं ध्यान रखूॅगा कि मैं अपना शरीर गीला न रखूॅ।

मैं तो नहाऊॅगा भी नहीं क्योंकि अगर मेरा शरीर गीला रह गया तो वह ठंडा हो जायेगा और फिर मैं मर जाऊॅगा। मरने से तो अच्छा है कि गन्दे ही रह लो।"

सो काफी दिनों तक गुरू जी गन्दे ही रहे और अपने आश्रम में ही रहे। इससे उनकी आलमारियॉ और बक्से सब खाली हो गये। सो दक्षिणा कमाने के लिये गुरू जी और उनके शिष्यों को पास के गॉवों में जाना पड़ा तो वे गये।

गुरू जी जब आश्रम से चलने लगे तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा — "सावधान रहना। मुझे इस यात्रा में किसी तरह की परेशानी नहीं चाहिये। मैं तुमसे जो कहूॅ बस वही करना। मैं यह चाहता हूॅ कि मेरी यह यात्रा बिना पैसे खर्च किये और सुरक्षित तरीके से निबट जाये।"

गुरू जी के सारे शिष्यों ने उनकी यह बात ध्यान से सुनी। सो सब लोग चले और कई घंटे बिना किसी परेशानी के निकल गये। फिर वे एक बड़े से बागीचे में आये जिसमें बहुत सारे बड़े बड़े छायादार पेड़ लगे हुए थे। वे सब उस बागीचे में घूमने लगे।

घूमते घूमते एक पेड़ की शाख में गुरू जी की पगड़ी अटक गयी और वह नीचे गिर गयी। खरदिमाग और मूर्ख ने देखा कि गुरू जी की पगड़ी नीचे गिर गयी।

अब क्योंकि गुरू जी ने तो उनसे कुछ करने के लिये कहा नहीं था सो वे उसको उठाने के लिये रुके भी नहीं।

उन्होंने सोचा कि गुरू जी ने तो हमसे यह कहा हुआ है कि हम वही करें जो वह हमसे करने के लिये कहें तो हमको तो उनको खुश रखने के लिये उनकी आज्ञा माननी ही चाहिये न।

आखिर वे सब उस बागीचे से निकल कर बाहर धूप में आ गये तब गुरू जी के सिर को गरमी लगी। तब उनको पता चला कि उनकी पगड़ी तो उनके सिर पर नहीं है।

उन्होंने मूर्ख से कहा — "अरे मूर्ख मेरी पगड़ी कहाँ है ज़रा देना तो।"

मूर्ख और खरदिमाग दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। मूर्ख हकलाता हुआ बोला — "गुरू जी आपकी पगड़ी तो बागीचे में गिर पड़ी थी। आपने हमको ऐसी चीज़ें उठाने के लिये कुछ कहा नहीं था सो हमने वह उठायी नहीं। हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकते थे।"

गुरू जी चिल्लाये — "अरे मूर्खों क्या मुझे तुम्हें हर बात के लिये कहना पड़ेगा? तुम्हारे पास अपनी कोई अक्ल नहीं है क्या? मैं यह यात्रा बहुत ही सीधी सादी और शान्तिपूर्ण करना चाहता हूँ। जो भी गिर जाये वह सब उठा लो। यह तो सभी जानते हैं। सबकी समझ में आ गया न?"

खरदिमाग बोला — "जी गुरू जी। मेहरबानी करके अबकी बार हमें माफ कर दें और हमारे ऊपर दया रखें। अबसे जो भी गिरेगा हम वह सब उठा लेंगे।"

गुरू जी ने देखा कि उनको शिष्यों की समझ में आ गया तो वह सन्तुष्ट हो गये और मुस्कुरा दिये। मूर्ख गुरू जी की पगड़ी लेने के

लिये तुरन्त ही भागा गया और उसे उठा लाया। लोग फिर आगे बढ़ गये।

गुरू जी के घोड़े ने उस बागीचे में बहुत सारी हरी हरी घास खायी थी सो कुछ देर बाद उसने लीद कर दी। मूर्ख ने सोचा कि हमारे गुरू जी ने कहा है कि जो कुछ भी गिरे हम उस सबको उठा लें।

मैं गुरू जी को नाखुश नहीं करना चाहता सो मुझे इसे उठा लेना चाहिये। उसने तुरन्त ही घोड़े की लीद उठा कर गुरू जी की पगड़ी में रख ली।

अब उसको गुरू जी को यह दिखाने की बहुत उत्सुकता हुई कि उसने गुरू जी आज्ञा का कितनी अच्छी तरह से पालन किया है सो वह पगड़ी में घोड़े की लीद ले कर गुरू जी के सामने जा पहुँचा और उसको उन्हें दिखाने लगा।

उसको देख कर गुरू जी चिल्लाये — "हे भगवान। यह तुमने क्या किया? तुमने यह लीद उठा कर मेरी पगड़ी में क्यों रख ली? मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुमने यह सब किया। अरे मूर्ख, तुमने ऐसा क्यों किया?"

मूर्ख कुछ भुनभुनाता हुआ बोला — "मुझे लगा कि आप खुश होंगे। आप ही ने तो कहा था कि जो कुछ भी नीचे गिरे हम उसको उठा लें। तो मैं तो केवल आपकी आज्ञा का पालन ही कर रहा था।"

गुरू जी मजाक बनाते हुए बोले —"जब मैंने तुमसे यह कहा था कि जो कुछ भी नीचे गिर जाये उसे उठा लो तो उससे मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम घोड़ी की लीद भी उठा लो। यह पागलपन है। तुमको ज़रा सी भी अक्ल नहीं है क्या।

क्या तुम हमारे धर्म की किताबें नहीं पढ़ते? उनमें तो साफ लिखा है कि तुमको क्या उठाना चाहिये और क्या नहीं उठाना चाहिये।"

खरदिमाग ने अपनी दलील दी — "गुरू जी हम तो चकरा ही गये थे। पहले तो आपने कहा कि हम बिना आपकी आज्ञा के कुछ न करें फिर आप गुस्सा हो गये क्योंकि आपने हमें कुछ करने की आज्ञा नहीं दी।

फिर आपने कहा कि हम वह सब कुछ उठा लें जो गिर जाये और फिर जब हमने उसे उठाया तो आप फिर गुस्सा हो गये।

गुरु जी, हम आपके बहुत अक्लमन्द शिष्य नहीं हैं। इतनी सब बातें हम लोग केवल धर्म की किताबें पढ़ कर ही नहीं समझ सकते।

हमारे लिये तो वह ज़्यादा अच्छा होगा अगर आप हमको इस सब की एक लिस्ट बना दें। तब हमको यह ठीक से पता चल जायेगा कि आप हमसे वाकई चाहते क्या हैं।"

गुरू जी अपने शिष्य को सच बोलते हुए देख कर बहुत खुश हुए और बोले — "ठीक है मैं तुमको एक बड़ी सी लिस्ट बना कर

दूँगा। तुम अगर उसी लिस्ट के अनुसार काम करोगे तो सब कुछ ठीक से चलता रहेगा।"

गुरू जी ने जल्दी ही एक लम्बी सी उन सब कामों की लिस्ट बना कर अपने शिष्य को दे दी जो काम भी उस समय उनके दिमाग में आये और फिर वे सब आगे चले।

कुछ दूर जाने के बाद वे सब एक कीचड़ से भरी हुई जमीन पर आ गये। हालॉकि सारे शिष्य सावधान थे पर फिर भी गुरू जी के थके बूढ़े घोड़े का पैर फिसला, वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा।

बूढे गुरू जी भी अपने आपको सॅभाल न सके और उस घोड़े के साथ साथ नीचे कीचड़ के गड्ढे में गिर पड़े। उनके पैर ऊपर थे सिर कीचड़ में था। यह तो एक देखने वाला दृश्य था। किसी तरह से गुरू जी अपने आपको सॅभालते हुए उठे।

उन्होंने अपनी ऑखों से कीचड़ पोंछी तो देखा कि उनके शिष्य तो उनके बिना ही आगे चले जा रहे थे। यह देख कर गुरू जी घबरा गये और चिल्ला कर बोले — "अरे तुम सब कहॉ जा रहे हो? मेरी सहायता करो। मुझे यहॉ से निकालो।"

गुरू जी को पुकारते सुन कर शिष्यों ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गये। मूर्ख ने पूछा — "अब हम क्या करें?"

खरदिमाग अपने आपको सॅभालते हुए बोला — "पर यह तो बिल्कुल साफ है। हमको तो केवल अपनी उस लिस्ट को देखना है जो हमको हमारे गुरू जी ने दी है।

उन्होंने तो हमको साफ साफ कह रखा है कि तुम लोग इस लिस्ट के अनुसार काम करो तो सब कुछ बहुत अच्छा रहेगा।"

सारे शिष्य एक साथ बोले — "हॉ यह तो ठीक है। चलो जल्दी से लिस्ट देखो कि उसमें क्या लिखा है।"

खरदिमाग ने जल्दी से वह लिस्ट ढूँढी और उसको पढ़ना शुरू किया – पगड़ी, धोती, चादर, गमछा, कच्छा, बटुआ आदि। पर इसमें गुरू जी का नाम तो कहीं नहीं है कि अगर गुरू जी गिर जायें तो हमको उनको भी उठाना चाहिये या नहीं।

तो यह मामला तो बिल्कुल साफ है। ऐसा लगता है कि गुरू जी हमारा इम्तिहान ले रहे है। हमको अपनी लिस्ट देखनी चाहिये, उसी के अनुसार काम करना चाहिये और उनको यहीं छोड़ देना चाहिये।

इस तरह कम से कम एक बार तो बजाय हमको डॉटने के वह हमारी तारीफ करेंगे। चलो जल्दी करो, अपना सामान उठाओ हम अपनी यात्रा पर चलते हैं।" सो सबने अपना अपना सामान उठाया और आगे चल दिये।

बेचारे गुरू जी वहॉ कीचड़ में अकेले नंगे खड़े रह गये और शिष्य आगे चले गये। गुरू जी बहुत ही अजीब हालत में खड़े थे। वह सोच रहे थे अब मैं क्या करूँ। मेरे शिष्यों ने तो न केवल मेरी इज़्ज़त उतार ली बल्कि मेरे तो कपड़े भी उतार लिये।

अचानक उनको एक यात्री उधर से जाता हुआ दिखायी दे गया तो उन्होंने उसे ज़ोर से आवाज दे कर बुलाया — "जनाब मेरी सहायता कीजिये। मैं यहॉ मुसीबत में फॅसा हूॅ।"

वह यात्री गुरू जी के पास आया और उनसे बोला — "आपको यहॉ इस हालत में देख कर मुझे बहुत अफसोस हो रहा है। बताइये मैं आपके लिये क्या करूॅ?"

गुरू जी ने शान्ति से कहा — "मुझे ताड़ का एक पत्ता दो और एक कलम दो लिखने के लिये।"

यात्री ने तुरन्त ही गुरू जी को ताड़ का एक पत्ता और एक कलम दे दिया तो गुरू जी ने उस पर लिखा "अगर तुम्हारे गुरू जी घोड़े पर से किसी गड्ढे में गिर जायें तो पहले उनको उठाओ और फिर आगे बढ़ो।"

यह लिख कर गुरू जी ने उस यात्री से प्रार्थना की कि वह पत्ता वह आगे जाते हुए उसके शिष्यों को दे दे — "मेरे शिष्य आगे चले गये हैं। मैं आपका बहुत आभारी रहूॅगा अगर आप यह पत्ता उनको दे देंगे तो। यह बहुत जल्दी का मामला है। मेहरबानी करके इसे उनको तुरन्त ही दे दें।

यात्री बोला — "ठीक है मैं इसको उनको तुरन्त ही देने की कोशिश करता हूॅ। आप वाकई बहुत मुश्किल में हैं।"

कह कर वह उस पत्ते को ले कर उनके शिष्यों की तरफ चल दिया। जैसे ही वह उनके पास तक आया वह वहीं से चिल्लाया — "मेरे पास तुम्हारे लिये तुम्हारे गुरू जी की एक चिट्ठी है।"

यह सुन कर कि उनके गुरू जी की उनके लिये एक चिट्ठी है वे शिष्य उस यात्री की तरफ दौड़े।

खरदिमाग ने उस यात्री से कहा — "अगर यह चिट्ठी हमारे गुरू जी की है तो इसे हमें दो दो। हम तो उनकी हमेशा ही सेवा करने को तैयार रहते हैं।"

यात्री ने एक बार उस शिष्य के ऊपर एक नजर डाली और वह पत्ता उसको दे दिया। वह फिर बोला — "तुम्हारे बेचारे गुरू जी बहुत मुश्किल में हैं। उनको ठंड भी बहुत लग रही है और उनको शरम भी बहुत आ रही है। तुम उनके पास दौड़ कर जाओ, उनसे माफी मॉगो और उनकी सहायता करो।"

उसने उस पत्ते में लिखे सन्देश को पढ़ा और रोते हुए बोला — "हमारे गुरू जी बहुत मुश्किल में हैं। हमको उनकी सहायता के लिये तुरन्त चलना चाहिये। चलो जल्दी से चलें।"

सारे शिष्य गुरू जी की तरफ भाग लिये। वहॉ जा कर उन्होंने देखा कि उनके गुरू जी तो कीचड़ में छाती तक धॅसे खड़े हैं और ठंड से कॉप रहे हैं।

6 छठी घटना – गुरू जी की मौत

गुरू जी दुखी से बिना बोले वहॉ खड़े रहे। शिष्यों ने उनकी सब कीचड़ साफ की, उनको साफ सुथरे कपड़े पहनाये और फिर उनको घोड़े पर बिठाया। उनका सारा शरीर ठंडा हो रहा था और दर्द कर रहा था।

अचानक गुरू जी के दिमाग में एक विचार कौंध गया। उन्होंने सोचा — "ओह नहीं। उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी। उसने कहा था कि जब मेरी बैठने की जगह ठंडी होगी तब मैं इस दुनियॉ से चला जाऊॅगा।

और अब तो में ठंडा हो रहा हूॅ। मैं क्या करूॅ। मेरे शिष्यों के तो दिमाग ही नहीं है।"

इससे आगे तो वह सोच ही नहीं सके। फिर उन्होंने सोचा कि "सब कुछ जानते हुए भी इस समय चुप रहना ही ठीक है। क्योंकि यह ठंड शायद घोड़े से गिरने की वजह से जो धक्का लगा है उसी की हो। अभी मैं सब कुछ भगवान पर छोड़ देता हूॅ।"

लेकिन ठंडे होने का विचार उनके दिमाग से निकल ही नहीं पा रहा था। वह अपने शिष्यों से बोले — "चलो अपनी यात्रा जारी रखते हैं। मैं अपने आश्रम जल्दी से जल्दी पहुॅच जाना चाहता हूॅ। इस यात्रा में हमने काफी काम कर लिये।"

शाम तक वे सब आश्रम पहुॅच गये। गुरू जी अपने घोड़े पर से उतर कर अपने कमरे में गये। उन्होंने न खाना खाया, न वह नहाये

और न ही अपनी मालिश करवायी। बस जा कर वह अपने बिस्तर पर लेट गये।

कुछ देर के लिये वह अपने शिष्यों को बिल्कुल भूल जाना चाहते थे। उनके शिष्यों ने भी चुपचाप अपना सामान खोला, नहाये धोये और फिर आराम करने के लिये लेट गये।

गुरू जी सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। उनके बैठने की जगह अभी भी ठंडी थी। उनको मालूम था कि मौत आने वाली थी और वह बहुत डरे हुए थे। सारी रात उनकी कराहते हुए गुजरी।

"मेरे आश्रम का क्या होगा? मेरे घोड़े का क्या होगा? और मेरा क्या होगा?" सारी रात बस वह यही सोचते रहे।

सुबह हुई तो गुरू जी ने अपने शिष्यों को बुलाया — "खरदिमाग, गधा, मूर्ख, कमजोर और बेवकूफ। सब लोग यहॉ आओ। मुझे तुम लोगों से कुछ बात करनी है।"

शिष्य तो गुरू जी की सेवा के लिये हर समय ही तैयार ही रहते थे सो गुरू जी की आवाज सुन कर वे तुरन्त ही वहॉ दौड़े चले आये।

जैसे ही गुरू जी ने उन सबको आते देखा तो उन्होंने पहले से सोची हुई अपनी स्पीच बोलनी शुरू कर दी — "मेरे प्यारे शिष्यों, मेरी मौत का समय अब करीब आ रहा है। जैसा कि तुम लोगों को

मालूम कि उस ब्राह्मण ने कहा था कि जब मेरी बैठने की जगह ठंडी होगी तब मैं मर जाऊँगा।

मेरी बैठने की जगह कल से ठंडी है। मैं तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम मेरे लिये एक बहुत अच्छी समाधि बनवाना और मुझे उसमें लिटा देना।"

गुरू जी की यह बात सुन कर सारे शिष्य बहुत डर गये। गुरू जी की ऑखें गड्ढे में घुस गयीं थीं। चेहरा सफेद पड़ता जा रहा था। उनके होठ टेढ़े हो रहे थे। गला सूख रहा था और वह पागलों की तरह से इधर उधर देख रहे थे।

यह सब देखने में तो खराब लग ही रहा था पर उनके मुँह से निकले शब्द भी ठीक से सुनायी नहीं दे रहे थे।

गधे ने गुरू जी को तसल्ली देत हुए कहा — "गुरू जी थोड़ी तसल्ली रखिये। हमें उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी मालूम है। पर हम सबको यह भी मालूम है कि आप इन सबसे ऊपर हैं।

पर आप चिन्ता न करें हम एक अच्छे हाथ देखने वाले को ले कर आते हैं और देखते हैं कि वह क्या कहता है।

वह हाथ देखने वाला यहॉ के किसी भी पंडित से, यहॉ तक कि उस ब्राह्मण से भी, ज़्यादा अक्लमन्द है। आप ज़रा धीरज धरें और भगवान में विश्वास रखें। मुझे यकीन है कि उसकी भविष्यवाणी ज़्यादा ठीक होगी।"

गुरू जी बोले — "ठीक है। अब मेरी ज़िन्दगी तुम लोगों के हाथ में है जैसा ठीक समझो करो।"

तुरन्त ही खरदिमाग और मूर्ख दोनों पास के गॉव की तरफ दौड़ गये और वहॉ से एक ज्योतिषी से अपने गुरू जी का हाथ देखने के लिये कहा। ज्योतिषी को उनके इस गुरू जी को देखने की उत्सुकता हुई तो वह उनको देखने के लिये चला आया।

तीनों एक घंटे के अन्दर अन्दर गुरू जी के पास थे। हाथ देखने वाले ने गुरू जी का हाथ अपने हाथ में लिया और उसको पूरी तरीके से देखा। लोगों को लगा जैसे उसने हाथ देखने में एक घंटा लगा दिया हो।

हाथ देख कर वह जान बूझ कर उस बिस्तर पर पड़े आदमी से बोला — "आपके बैठने की जगह तो सचमुच में ही बहुत ठंडी है। पर अपनी ताकत से मैं इस भविष्यवाणी को उलटी कर सकता हूॅ और मैं उस ब्राह्मण को जिसने आपको इतनी चिन्ता में डाल दिया है शाप दे दूॅगा कि जब उसकी बैठने की जगह ठंडी हो वह भी तभी मरे।"

गुरू जी बोले — "अपने धर्म की किताबों में तो मैंने कभी ऐसे उलटे शाप के बारे में नहीं सुना।"

वह हाथ देखने वाला बोला — "आपको यह सब धर्म की किसी किताब में नहीं मिलेगा। यह तो केवल गुप्त धर्मों की किताबों

में ही मिलता है। यह कैसे काम करता है मैं इसकी आपको एक कहानी सुनाता हूँ।

"यह बहुत पुरानी बात है कि दक्षिण भारत के एक छोटे से गॉव में एक व्यवसायी रहता था जो शिव जी का बहुत बड़ा भक्त था। यह उसका नियम था कि उसको जो भी साधु मिलता वह उसको दोपहर के खाने के लिये घर बुला लेता।

उन लोगों के माथे पर तीन लाइनें देख कर वह न केवल उनको खाने के लिये बुलाता बल्कि उनको वह वह भी देता जो कुछ वे चाहते थे।

दूसरी तरफ उसकी पत्नी बहुत ही कंजूस थी। उसको भूखों और सड़क के भिखारियों को खाना खिलाने और दान देने में कोई रुचि नहीं थी। वह अपने पति के इस व्यवहार पर खामोश तो रहती पर दिल ही दिल में यह सोचती रहती कि इस सबका अन्त कैसे किया जाये।

एक दिन उसके पति ने अपने नौकर के साथ एक बूढ़े साधु को खाना खाने के लिये घर भेजा। उस बूढ़े आदमी के सारे शरीर पर भस्म लगी हुई थी और वह केवल एक फटी हुई कौपीन[25] पहने था। जब उस स्त्री ने उसको घर आते हुए देखा तो वह बहुत गुस्सा हुई।

[25] Translated for the word "Loincloth". See its picture aove. It is called "Langotee" also.

वह गुस्से से चिल्लायी — "यह सब क्या है। मेरा पति तो बिल्कुल ही पागल है। यह मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करता है। पर ठीक है बस यह आखिरी बार। आज मैं इसका अन्त करके ही छोड़ूँगी।"

उसी समय उस साधु ने घर के दरवाजे की घंटी बजायी। वह जल्दी से गयी और उसने दरवाजा खोला। उसको अन्दर बुला कर उसने उसे बरामदे में बिठाया।

आज वह इन साधुओं से हमेशा के लिये छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने सारे बरामदे में पहले तो गाय के गोबर का लेप कर दिया। फिर वह अन्दर से चावल कूटने वाली ओखली[26] ले आयी और उसको उस साधु के सामने रख दी।

फिर उसने उस मूसल के ऊपर और अपने ऊपर कुछ गुप्त मन्त्र पढ़ते हुए राख बिखेरी और नीचे झुक कर उसे प्रणाम किया। उसके बाद वह उठी और वह सारी जगह एक कपड़े से साफ कर दी।

यह सब देख कर साधु चुप न रह सका उसने पूछा — "माँ जी, आप इस मूसल की पूजा क्यों कर रही हैं? मैंने ऐसा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा। आप यह कर क्या रही हैं?"

[26] Grain Pounder, or a large sized mortar and pestle. See its picture above.

उस स्त्री ने जवाब दिया — "जनाब, यह हमारे परिवार का रिवाज है कि हमारे परिवार में अनाज कूटने वाली ओखली की इसी तरह से पूजा की जाती है।"

मेहमान ने कुछ परेशान हो कर फिर पूछा — "पर क्यों?"

स्त्री कुछ मुस्कुरायी और घर के अन्दर चली गयी। दरवाजे के पीछे से वह इतनी ज़ोर से बोली जितनी ज़ोर की आवाज वह साधु सुन ले — "शायद जब यह तुम्हारे सिर पर गिरेगा तब तुमको इसका पता चलेगा।"

उस साधु ने सोचा "ओह यह स्त्री तो मुझे मारना चहती है। लगता है कि यह तो पागल है। मैं तो यहॉ अब एक मिनट भी नहीं रुकने वाला।

मैं अपनी किस्मत का इम्तिहान नहीं लेता। यह तो अच्छा हुआ कि मैंने उसकी फुसफुसाहट साफ साफ सुन ली। मैं तो अब यहॉ से चलता हूँ।"

और वह तुरन्त ही वहॉ से उठ कर घर में से बाहर की तरफ भाग लिया। उसी समय वह व्यवसायी भी घर लौटा। उसने पूछा — "प्रिये, यह साधु हमारे घर से क्यों भाग रहा है। क्या तुमने उसे कुछ नाराज किया है?"

वह बोली — "यह आदमी पागल है। यह वहॉ बैठ कर हमारा अनाज कूटने वाला मॉग रहा था। अब क्योंकि हम उसको रोज रोज इस्तेमाल करते हैं इसलिये मैं उसको तो यह दे नहीं सकती थी। फिर

भी उसने उसको देने की जिद की तो मैंने कहा कि वह तुम्हारा इन्तजार करे और तुमसे उसको लेने की आज्ञा ले ले।

इस पर वह नाराज हो गया और यहॉ से भाग निकला। इसमें मैं क्या कर सकती हूँ?"

वह व्यवसायी चिल्लाया — "ओ मूर्ख स्त्री तूने इस साधु की बेइज़्ज़ती की है। तूने उसको वह अनाज कूटने वाला दे देना था। तुझे इतने साल हो गये और तुझको पता नहीं कि मैं कैसा आदमी हूँ। ला मुझे दे वह। मैं उसको ढूँढ कर अभी यह उसको दे कर आता हूँ।"

पति के डर से उसने जल्दी से वह अनाज कूटने वाला मूसल उठाया और उसको अपने पति को दे दिया। व्यवसायी ने वह अनाज कूटने वाला मूसल लिया और जल्दी जल्दी उस साधु के पीछे पीछे चला।

जब उसने साधु को देख लिया तो उसने वह अनाज कूटने वाला हिला कर उसको रोकने की कोशिश की।

साधु उस व्यवसायी के हाथ में उस अनाज कूटने वाले को देख कर डर गया। उसको लगा कि यह तो मुझे इस मूसल से मारने आ रहा है सो वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था वहॉ से भाग लिया।

व्यवसायी को भी लगा कि वह उस साधु को नहीं पकड़ सकेगा तो वह घर लौट आया।

वह घर आ कर अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "आज तुमने सब गड़बड़ कर दिया। अब इस घर में कोई साधु नहीं आयेगा।"

पत्नी ने सन्तोष की सॉस लेते हुए और मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा — "मैं भी तो यही चाहती थी कि इस घर में अब कोई साधु न आये।"

अब तक गुरू जी यह पूरी तरीके से भूल गये थे कि वह मरने वाले थे। यह कहानी सुन कर तो वह हॅसते हॅसते अपने बिस्तर पर लोट पोट हो रहे थे।

हॅसते हॅसते गुरू जी बोले — "यह तो बहुत ही बढ़िया कहानी है। पर मेरी तो अभी भी यह समझ में नहीं आया कि उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी कैसे पलटी जा सकती है।"

वह हाथ देखने वाला बोला — "मुझे माफ कीजियेगा अगर मैं सच सच बात कहॅू तो। असल में उस भविष्यवाणी पर हम लोगों ने ठीक से विचार ही नहीं किया। किसी भी बात को मानने या न मानने से पहले हम लोगों को अपना दिमाग इस्तेमाल करना चाहिये।

उस ब्राह्मण के कहने का मतलब यह नहीं था कि अगर आपके बैठने की जगह पानी से भी ठंडी हो जाये तभी भी आप मर जायेंगे। उसके कहने का मतलब तो यह था कि अगर आपके बैठने की जगह बिना किसी वजह के ठंडी हो जाये तब आप मर जायेंगे।

पर आप तो एक कीचड़ के गड्ढे में गिर पड़े थे और वहॉ भी आप उसमें दो घंटे पड़े रहे। तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि इस हालत में आप ठंडा महसूस नहीं करेंगे?

आप बिल्कुल फिक न करें आप अभी नहीं मरने वाले। आप बहुत दिनों तक खुश और तन्दुरुस्त ज़िन्दगी गुजारेंगे। यह कहानी तो मैंने यह बात कहने से पहले आपको केवल आपका मूड बदलने के लिये सुनायी थी।"

यह बात सुन कर गुरू जी के चेहरे पर चमक आ गयी। वह बोले — "यह बात तो आप सही कह रहे हैं पंडित जी। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ कि इतनी सी बात नहीं समझा।

आपको इस तकलीफ के लिये और आपकी इस बढ़िया कहानी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। मेहरबानी करके मेरी यह छोटी सी भेंट ये पन्द्रह सोने के सिक्के आप स्वीकार करें।"

हाथ देखने वाले ने वह पैसे खुशी से ले लिये और अपने घर चला गया।

सारे शिष्यों ने खुशी में भर कर एक दावत का इन्तजाम किया। गुरू जी ने भी खूब दिल भर कर खाया और आश्रम में एक बार फिर खुशियॉ छा गयीं। वहॉ फिर से बहुत से साधु आने लगे।

इस तरह फिर से कई महीने गुजर गये। मानसून का मौसम आ गया। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ने लगी।

आश्रम की छत में एक छोटा सा छेद था। कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि उस छेद में से जो पानी टपका वह गुरू जी के आसन पर टपका। जब गुरू जी अपने शिष्यों को पढ़ाने बैठे तो उन्होंने देखा कि उनके बैठने की जगह तो वाकई बहुत गीली थी।

गुरू जी के दिमाग में उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी फिर से घूम गयी सो उन्होंने अबकी बार से उसके गीले होने की वजह ढूँढी। पर क्योंकि बारिश रुक गयी थी इसलिये वह उसके गीले होने की वजह का पता न लगा सके।

गुरू जी फिर घबरा गये। उन्होंने तुरन्त ही अपने शिष्यों को आवाज लगायी — "खरदिमाग और गधे, मेरी बैठने की जगह बहुत गीली है। वह गीली क्यों है यह पता करो और फिर मुझे बताओ कि यह गीली क्यों है।"

उनके सभी शिष्य परेशान हो कर इधर उधर उसके गीले होने की वजह ढूँढने लगे पर कुछ पता ही नहीं लग पा रहा था क्योंकि अब बारिश तो हो नहीं रही थी सो पानी टपक नहीं रहा था।

अपने शिष्यों के चहरे पर नाउम्मीदी की झलक देख कर गुरू जी बहुत डर गये "आसन शीतम जीवन नाशम"। जब तुम्हारे बैठने की जगह ठंडी होगी तब तुम मर जाओगे। यही सोच कर वह तो बेहोश गये।

और उस हाथ देखने वाले के अनुसार तो उनको अपनी बैठने की जगह के ठंडे होने का कारण भी पता नहीं चल पा रहा था।

कुछ देर तक तो उनके शिष्य उनको होश में लाने की कोशिश करते रहे पर वे गुरू जी को होश में न ला पाये।

गधा तो यह देख कर रोने लगा — "लगता है गुरू जी तो हम सबको छोड़ कर चले गये।"

यह सुनते ही सारे शिष्य रोने लगे चिल्लाने लगे और दुख से जमीन पर लोटने लगे। पर फिर भी गुरू जी होश में नहीं आये।

कुछ देर के बाद गधे ने अपने आपको सँभाला और अपने गुरू भाइयों से कहा — "हमारा यह व्यवहार हमारे गुरू जी के लायक नहीं है। हम सबको तरीके से रहना चाहिये। हमको जो कुछ करना चाहिये हमको वही करना चाहिये।

खरदिमाग और बेवकूफ, जाओ तालाब में पानी भरो। हमको अपने गुरू जी को नहलाना है और फिर उनके शरीर को अन्तिम संस्कार के लिये तैयार करना है।"

खरदिमाग और बेवकूफ दोनो ज़ोर ज़ोर से रोते हुए तालाब में पानी भरने के लिये चल दिये। उसमें पानी भरने के बाद उन्होंने गुरू जी के शरीर को उस तालाब के पानी में उतार दिया और उसको नहलाने लगे।

ठंडे पानी की ठंडक से गुरू जी होश में आ गये। उन्होंने साँस लेने के लिये अपने एक शिष्य का हाथ पकड़ा।

खरदिमाग चिल्लाया — "भूत भूत। किसी भूत ने हमारे गुरू जी को पकड़ लिया है। जल्दी करो लाश को पानी में नीचे दबा कर

रखो। हम अपने गुरू जी की लाश को इस तरह से परेशान नहीं कर सकते।"

सो सारे शिष्यों ने उनके शरीर को दबा कर पानी में रखने की कोशिश की पर गुरू जी तो सॉस लेने के लिये तड़प रहे थे सो वह अपना सिर इधर से उधर फेंक रहे थे।

गधा चिल्लाया — "ऐसा लगता है कि ये भूत बहुत ही ताकतवर हैं। हम इन भूतों को नहीं हरा सकते। हमको यह आश्रम छोड़ कर हिमालय चले जाना चाहिये।"

सभी शिष्य एक साथ चिल्लाये — "हॉ हॉ। हमारे गुरू जी हमारे इस जाने से जरूर ही खुश होंगे।"

सो सारे शिष्य चीखते चिल्लाते अपने हाथ हवा में हिलाते हुए गुरू जी के शरीर को वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग लिये।

गुरू जी की शिक्षा

गुरू जी ने तालाब की सतह के ऊपर से अपने पॉचों शिष्यों को भागते हुए देख कर सोचा — "क्या मुझे भूतों ने पकड़ रखा है जो ये लोग मुझे यहॉ अकेला इस हालत में छोड़ कर इस तरह भाग गये?

ऐसा लगता है कि मेरे पॉचों शिष्य शान्ति पाने के लिये मुझे यहॉ अकेला छोड़ कर भाग गये। खैर अब तो मेरे सामने सबसे पहली समस्या यह है कि मैं इस तालाब में से कैसे निकलूॅ?"

उसी समय उनको वहॉ से वह किसान गुजरता दिखायी दे गया जिसने उन लोगों को घोड़ी दान में दी थी।

देखते ही वह बोला — "ऐसा लगता है कि मैं यहॉ बिल्कुल ठीक समय पर आ गया। मैं आपको इस तालाब में से बाहर निकालता हूॅ। यहॉ तो आप बहुत परेशान से दिखायी दे रहे हैं।"

सो उस किसान ने गुरू जी को उनका हाथ पकड़ कर उस ताालाब से बाहर खींच लिया और दस मिनट में ही गुरू जी बिल्कुल ठीक और खुश तालाब के बाहर खड़े थे। मुस्कुरा कर उन्होंने किसान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

किसान बोला — "नहीं गुरू जी। इसमें धन्यवाद की क्या बात है। अच्छा हुआ मैं समय पर आ गया और आपको इस तालाब में से निकाल सका।

पर आप मुझे यह तो बताइये कि आपके आश्रम में हुआ क्या क्योंकि आपको बिना आपके शिष्यों के पानी के तालाब में देख कर मुझे कुछ उत्सुकता हो रही है।"

गुरू जी ने उसको हॅसते हुए अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर उस किसान की तरफ देखते हुए बोले — "अब मैं थोड़ी सी शान्ति पाने के लिये आजाद हूॅ। तुम बहुत ही अच्छे आदमी हो और एक अच्छे दोस्त भी साबित हुए हो। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम अपनी ज़िन्दगी कैसे चलाते हो।

देखो हिचकना नहीं। मैं बहुत दिनों से पढ़ा रहा हूँ पर मुझे आता कुछ नहीं। जब आदमी को कुछ नहीं आता तो उसमें उसे कोई खुशी नहीं मिलती। सो अगर तुम मेरे सच्चे दोस्त हो तो तुम मुझे वह सब बताओ जो तुम जानते हो।

तुम्हारी बातें और तुम्हारा व्यवहार दूसरे किसानों जैसा नहीं है। तुम बहुत ही दयावान और सीधे सादे हो। तुम्हारे अन्दर जरूर ही शान्ति होगी। तुम अपनी शान्ति का भेद मुझे बताओ।"

किसान बोला — "क्योंकि आप यह सब खुद मुझसे पूछ रहे हैं इसलिये मैं आपको सब बताता हूँ हालाँकि मैं एक सादा सा किसान ही तो हूँ कोई विद्वान पंडित तो नहीं।

यह बहुत साल पुरानी बात है कि एक बार एक साधु मेरे घर भीख माँगने आये। उस समय मैं भी अपनी ज़िन्दगी से जूझ रहा था। मेरी खराब हालत देख कर उन बेचारों ने मुझसे बातें करने के लिये कुछ समय निकाला। असल में वह मेरे घर में एक हफ्ता रहे।

वह अपनी साधना पूजा और अपने रोज के कामों में बहुत ही नियमित थे इसलिये मैं उनको बीच में तंग नहीं करता था।

वह मुझे रोज बुलाते थे और श्री वेद व्यास जी की लिखी हुई बातें मुझे समझाते थे। वे उनको मुझे इतनी अच्छी तरह समझाते थे कि उनके वे शब्द मेरे केवल कानों में ही नहीं पड़ते बल्कि मेरे दिल तक में उतर जाते। वे मेरे लिये जादू की दवा की तरह थे जो मेरा सारा दर्द दूर कर देते।

बदकिस्मती से एक दिन उनके जाने का दिन भी आ गया। मैंने उनसे रुकने की बहुत प्रार्थना की पर यह उनके लिये मुमकिन नहीं था। वह विष्णु जी के भक्त थे और लोगों को उपदेश देते थे। उनकी ज़िन्दगी और उनकी संगति तो सबके लिये थी।

मुझे दुखी देख कर उन्होंने मुझे श्री भगवद् गीता की एक किताब दी जो वह रोज पढ़ते थे और मुझसे वायदा किया कि वह मुझसे कुछ ही महीनों में मिलने जरूर आयेंगे।

क्योंकि मैं उनको बहुत याद करता था इसलिये मैं उस किताब को रोज पढ़ता था और वह मुझको बहुत शान्ति देती थी। मैं उसको जितना पढ़ता था मुझे उससे उतनी ही ज़्यादा शान्ति मिलती थी और मैं उन सादे से पर इतने बड़े साधु का उतना ही ज़्यादा भक्त बनता जाता था।

कुछ महीने बाद वह साधु मुझसे मिलने आये तो मैं उनके पैरों पर गिर पड़ा और मैंने उनसे अपना अध्यात्मिक गुरू बनने की प्रार्थना की। उसी दिन उन्होंने एक छोटा सा हवन किया और मुझे भी भगवान विष्णु का भक्त बना दिया।

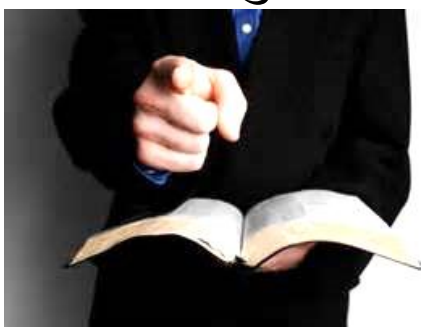

उन्हीं की दया से मेरे परेशानी और दुख के दिन खत्म हो गये और उस दिन के बाद से भगवद् गीता ही मेरी ज़िन्दगी और आत्मा बन गयी। वह छोटी सी किताब अभी भी मेरे पास है और मैं अभी भी उसको रोज पढ़ता हूँ।"

यह सुन कर गुरू परमार्थ के मुँह से निकला — "ओह यह सब कितना सुन्दर है। भगवान की माया भी कितनी अजीब है। क्या तुम वह किताब मुझको भी पढ़ने के लिये दोगे? क्या वह किताब हम दोनों रोज साथ साथ पढ़ सकते हैं?"

किसान खुशी से बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। गुरू की भेंट तो सबके साथ बॉटने के लिये ही होती है। हम यह कल से ही शुरू कर देते हैं। करें?"

"हॉ बिल्कुल।"

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**